सचित्र बाल कथाएँ

संतों की बोध कथाएँ

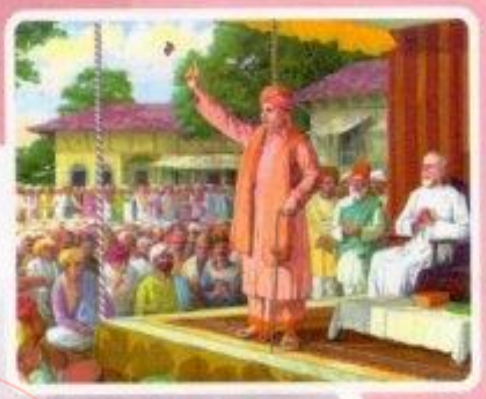

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

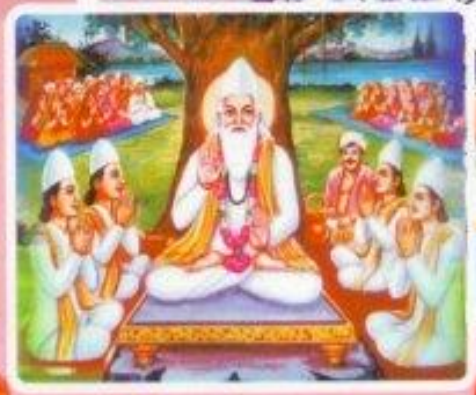

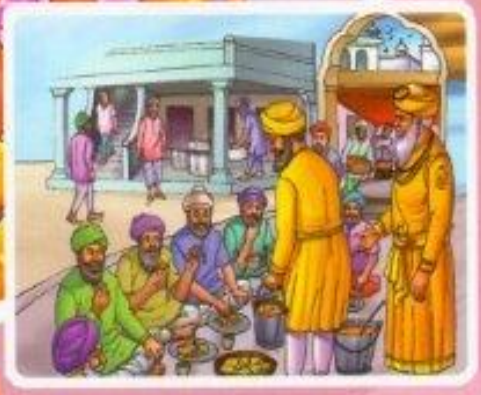

15

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

गुरु के प्रति श्रद्धा

स्वामी रामतीर्थ बचपन में गाँव के एक मौलवी साहब से पढ़ा करते थे। प्रारंभिक पढ़ाई पूरी होने पर उन्हें पाठशाला भेजा गया। सब यह सोचने लगे कि मौलवी साहब को क्या दिया जाए, तब स्वामी रामतीर्थ के पिताजी उन्हें मासिक वेतन के अतिरिक्त इस समय कुछ और भेंट करना चाहते थे। तभी रामतीर्थ बोल उठे—"पिताजी! इन्हें अपनी बढ़िया दूध देने वाली गाय दे दीजिए। इन्होंने मुझे सबसे बढ़िया दूध मतलब विद्या का दूध पिलाया है।" शिष्य की इस ज्ञानमयी श्रद्धा से पिता तथा गुरु दोनों ही पुलकित हो उठे।

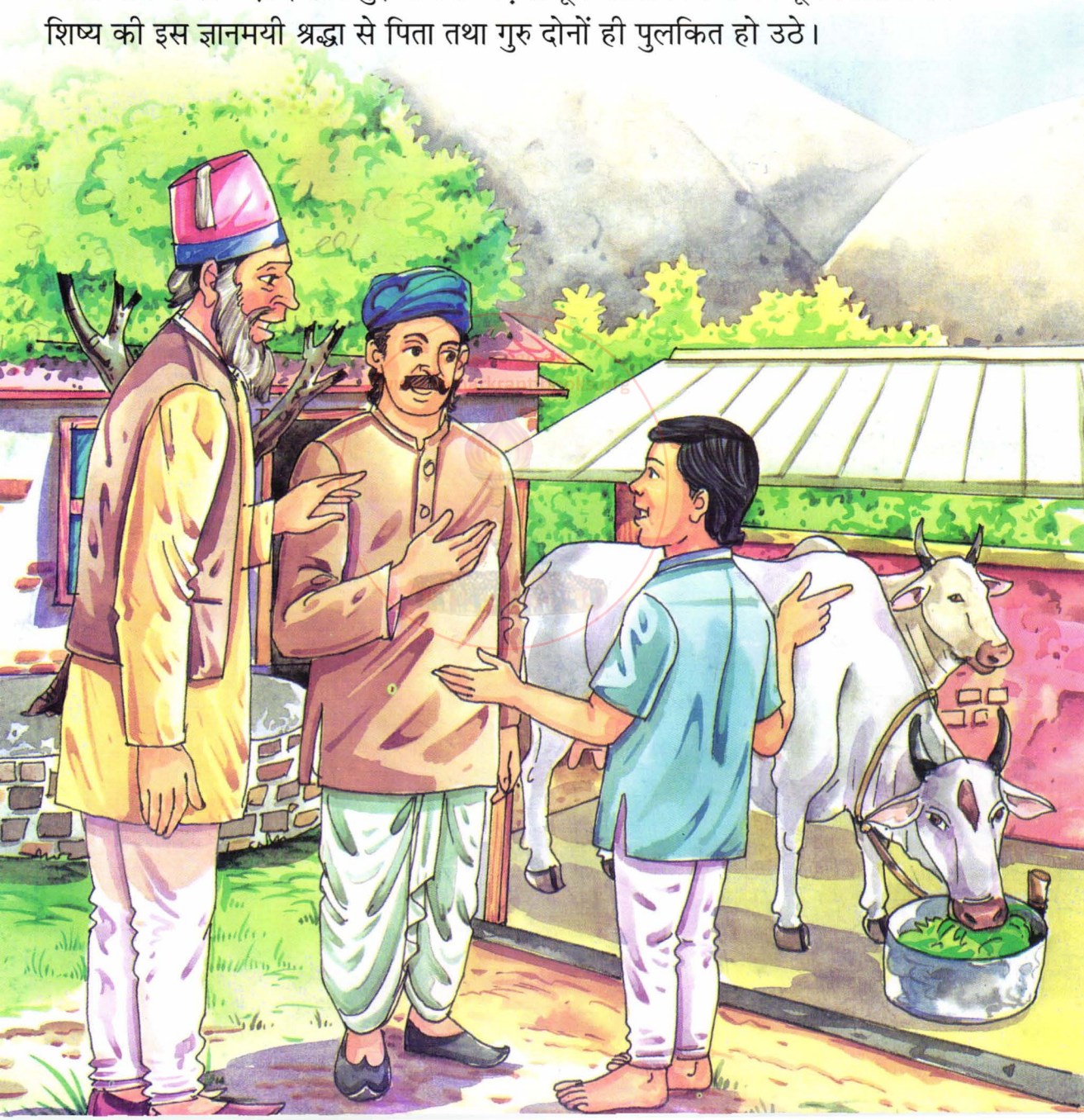

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महान आत्माएँ

रामकृष्ण परमहंस अपने शिष्यों के साथ टहलते हुए एक नदी के तट पर पहुँचे। वहाँ मछुए जाल फेंककर मछलियाँ पकड़ रहे थे। एक मछुए के पास स्वामी जी खड़े हो गए और शिष्यों से कहा—"तुम लोग ध्यानपूर्वक इस जाल में फँसी मछलियों की गतिविधि देखो।"

शिष्यों ने देखा कि कुछ मछलियाँ तो ऐसी हैं जो जाल में निश्चल पड़ी हैं, उन्होंने निकलने की कोई कोशिश ही नहीं की, कुछ मछलियाँ निकलने की कोशिश तो करती रहीं पर निकल नहीं पाईं और कुछ जाल से मुक्त होकर पुनः जल में क्रीड़ा करने लगीं।

परमहंस ने शिष्यों से कहा—"जिस प्रकार मछलियाँ तीन प्रकार की होती हैं उसी प्रकार मनुष्य भी तीन प्रकार के होते हैं। एक श्रेणी उनकी है, जिनकी आत्मा ने संसार का बंधन स्वीकार कर लिया है और इस भव-जाल से निकलने की बात सोचते ही नहीं; दूसरी श्रेणी ऐसे व्यक्तियों की है जो वीरों की तरह प्रयत्न तो करते हैं, पर मुक्ति से वंचित ही रहते हैं और तीसरी श्रेणी उन मनुष्यों की है जो अत्यधिक प्रयत्न द्वारा आखिर मुक्ति प्राप्त कर ही लेते हैं।"

परमहंस की बात समाप्त हुई। एक शिष्य बोला—"गुरुदेव! एक चौथी श्रेणी भी है, जिसके संबंध में आपने कुछ बताया ही नहीं।"

"हाँ, चौथी प्रकार की मछलियों की तरह ऐसी महान आत्माएँ भी होती हैं जो जाल के निकट ही नहीं आतीं फिर उनके फँसने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निंदा की चिंता नहीं

एक बार एक व्यक्ति ने स्वामी दयानंद से पूछा कि बहुत से व्यक्ति आपकी निंदा करते हैं, इन्हें कैसे रोका जाए?

स्वामी जी ने कहा—"निंदा से तो ईश्वर भी नहीं बच सका, फिर हमारी तो बात ही क्या है। यदि मनुष्य अपनी आत्मा के सामने सच्चा है तो उसे सारी दुनिया की परवाह नहीं करनी चाहिए।"

सच्चे आदमी को किसी का भय नहीं होता।

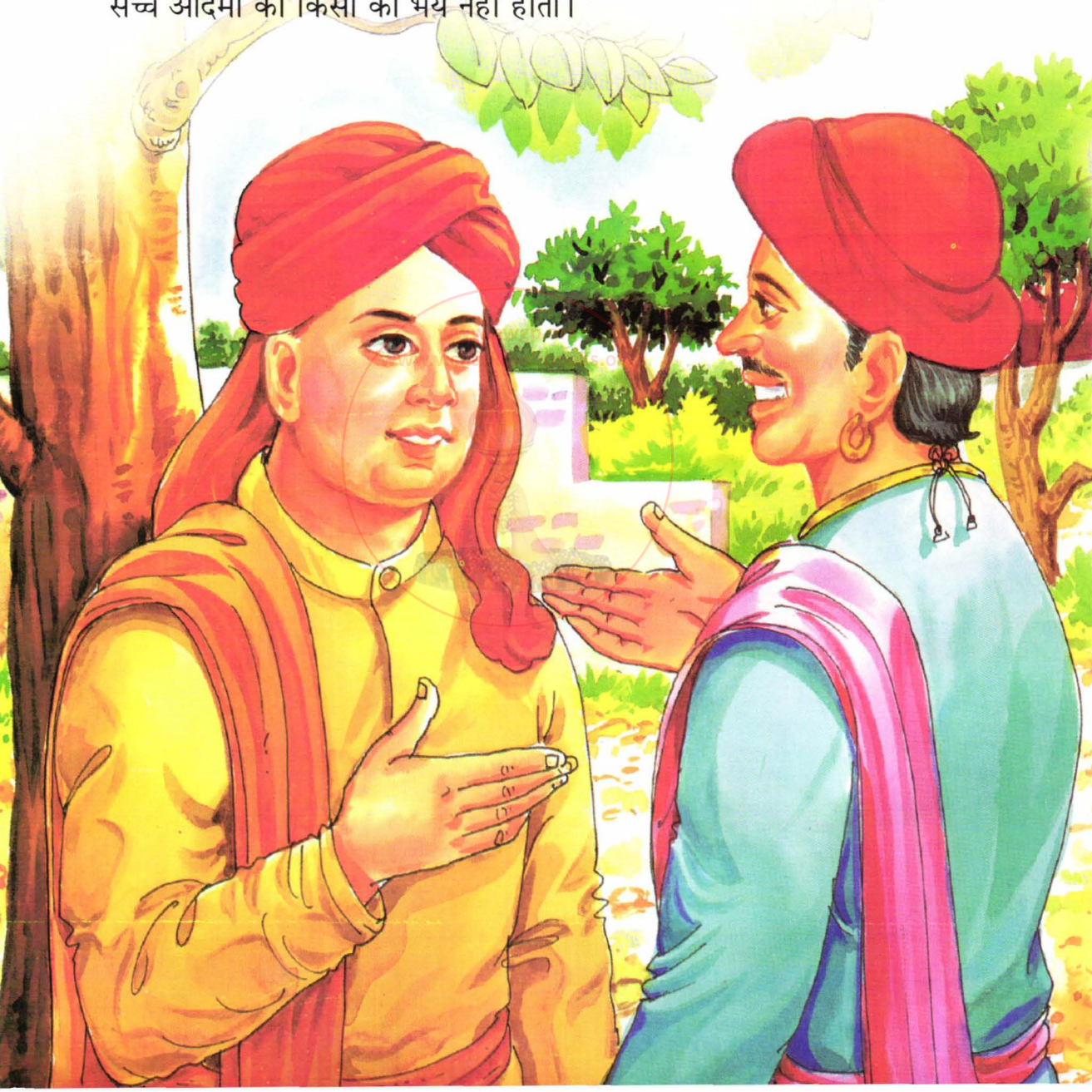

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पवित्र हाथ

गुरु गोविंद सिंह को प्यास लगी। उनने गाँव जाकर कहा—"मुझे पवित्र हाथों से पानी पीना है।" लोग हाथों को धोकर और बरतन मांजकर पानी लाए।

गुरु ने कहा—"हाथ परमार्थ के लिए श्रम करने से पवित्र होते हैं। मेरा तात्पर्य ऐसे सज्जन का जल पीने से था।" वैसा व्यक्ति न मिलने पर वे प्यासे ही आगे बढ़ गए।

व्यक्ति वही पवित्र और सज्जन कहलाता है जो दूसरों की सेवा तथा सहायता करता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संत राबिया

संत राबिया जंगल में तप कर रही थीं। पशु-पक्षी उसके इर्द-गिर्द बैठे हँस-खेल रहे थे। हसन उधर से निकले, उन्हें भी पहुँचा हुआ संत माना जाता था। हसन जैसे ही राबिया के नजदीक पहुँचे, सारे पशु-पक्षी उन्हें देखते ही भाग खड़े हुए। उन्हें अचंभा हुआ और राबिया से पूछा—"जानवर-परिंदे तुमसे लिपटे रहते हैं और मुझे देखकर भागते हैं, इसकी क्या वजह है ?"

राबिया ने पूछा—"आप खाते क्या हैं ?"

हसन ने कहा—"आमतौर से गोश्त ही खाने को मिलता है।"

राबिया हँस पड़ी। लोग आपको जो भी समझें उनकी मरजी। पर आपका दिल कैसा है, उसे यह नासमझ जानवर अच्छी तरह जानते हैं। संस्कारों में इसीलिए संयम पर अत्यधिक, विशेषकर आहार पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होती है।

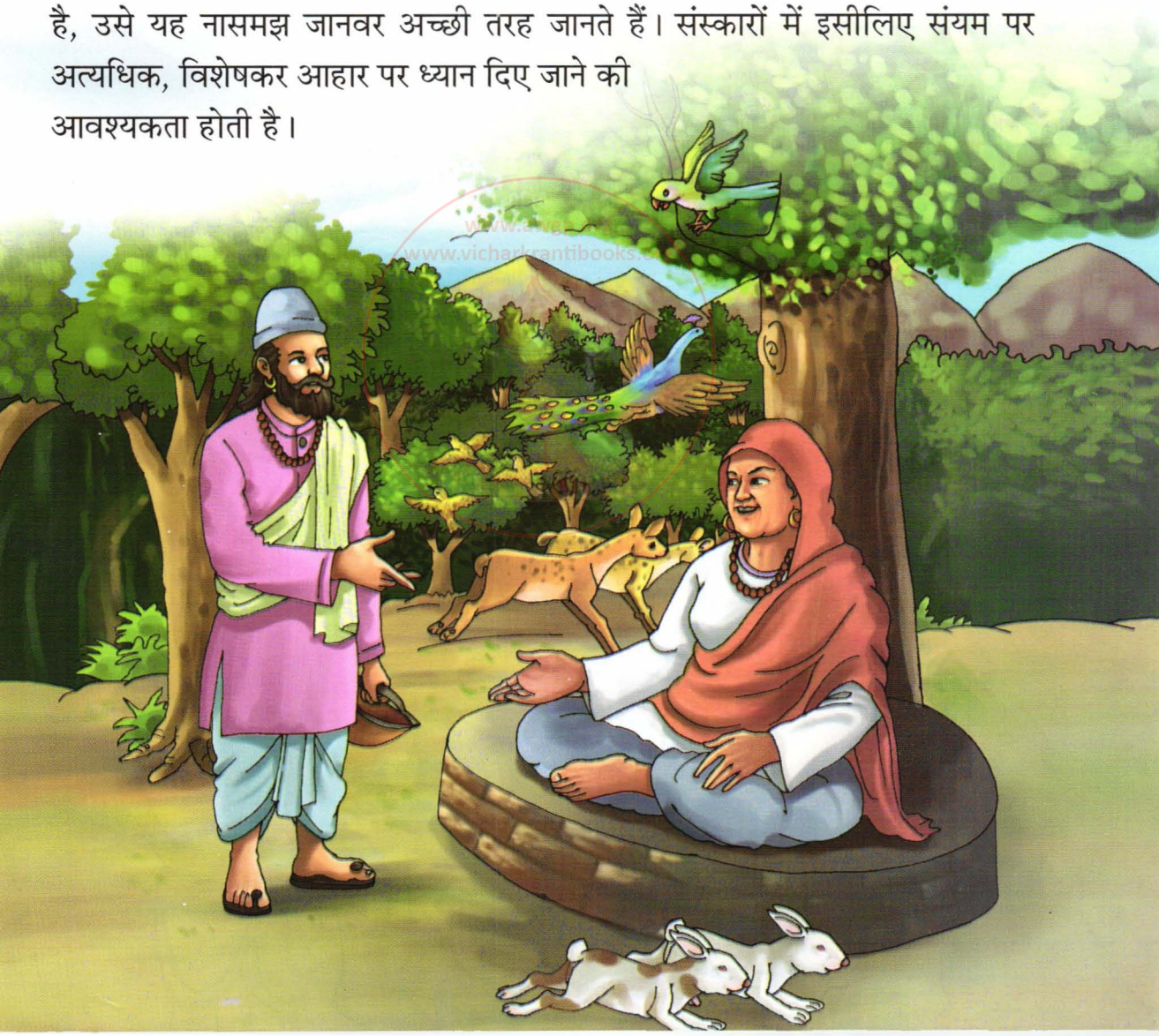

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सज्जनता का बिखराव

एक बार घूमते-घूमते संत नानक एक गाँव में गए। वहाँ के निवासियों ने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया। चलते समय नानकजी ने आशीर्वाद दिया—"उजड़ जाओ।" उसका मतलब कोई नहीं समझा।

इसके बाद वे दूसरे गाँव में गए तो वहाँ के लोगों ने तिरस्कार किया, कटु वचन बोले और लड़ने-झगड़ने पर उतारू हो गए। नानकजी ने आशीर्वाद दिया—"आबाद रहो।" इसका मतलब भी लोगों की समझ में नहीं आया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथ में चल रहे शिष्यों ने पूछा—"भगवन्! आपने आदर करने वालों को 'उजड़ जाओ' और तिरस्कार करने वालों को 'आबाद रहो' का उलटा आशीर्वाद क्यों दिया?"

नानक ने कहा—"सज्जन लोग उजड़ेंगे तो वे बिखरकर जहाँ भी जाएँगे सज्जनता फैलावेंगे। इसलिए उनका उजड़ना ही ठीक है। किंतु दुर्जन दुष्ट व्यक्ति यदि बिखरेंगे तो चारों ओर अशांति उत्पन्न न करें इसलिए उनके एक ही जगह रहने में भलाई है।"

सज्जन व्यक्ति जहाँ जाते हैं अच्छाइयाँ ही फैलाते हैं। उनको घूमते-फिरते लोगों को अच्छा बनाते रहना चाहिए जिससे अच्छे आदमी अधिक हो जाएँ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रोध मनुष्य का शत्रु है

चंडकौशिक अगले जन्म में भयंकर विषधर सर्प की देह लेकर जन्मे। जो कोई उधर से निकलता उसी का पीछा करते और जो पकड़ में आ जाता डसकर उसका प्राण हरण कर लेते। भगवान महावीर एक बार उस आश्रम में पधारे तो चंडकौशिक के काटने से उनका पैर क्षत-विक्षत हो चला। फिर भी वे मुस्कराते रहे और उस क्षुद्र प्राणी को अपनी अनंत क्षमा का पात्र बनाते रहे। आश्रमवासी उस दुष्ट जीव को मारने आए तो उन्होंने रोक दिया।

चंडकौशिक ने भगवान महावीर की उच्च सत्ता को पहचाना तो अपनी भूल पर पश्चाताप करने और क्षमा माँगने लगा।

भगवान ने कहा—"भद्र! तुम निर्दोष हो। दोषी तो यह क्रोध ही है। यही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। इसी के प्रभाव से मानव प्राणी पागल, अंधा और अपराधी बनता है। तुमने तप किया पर क्रोध न जीता। पहले क्रोध जीतो और उसके पश्चात तप करो।"

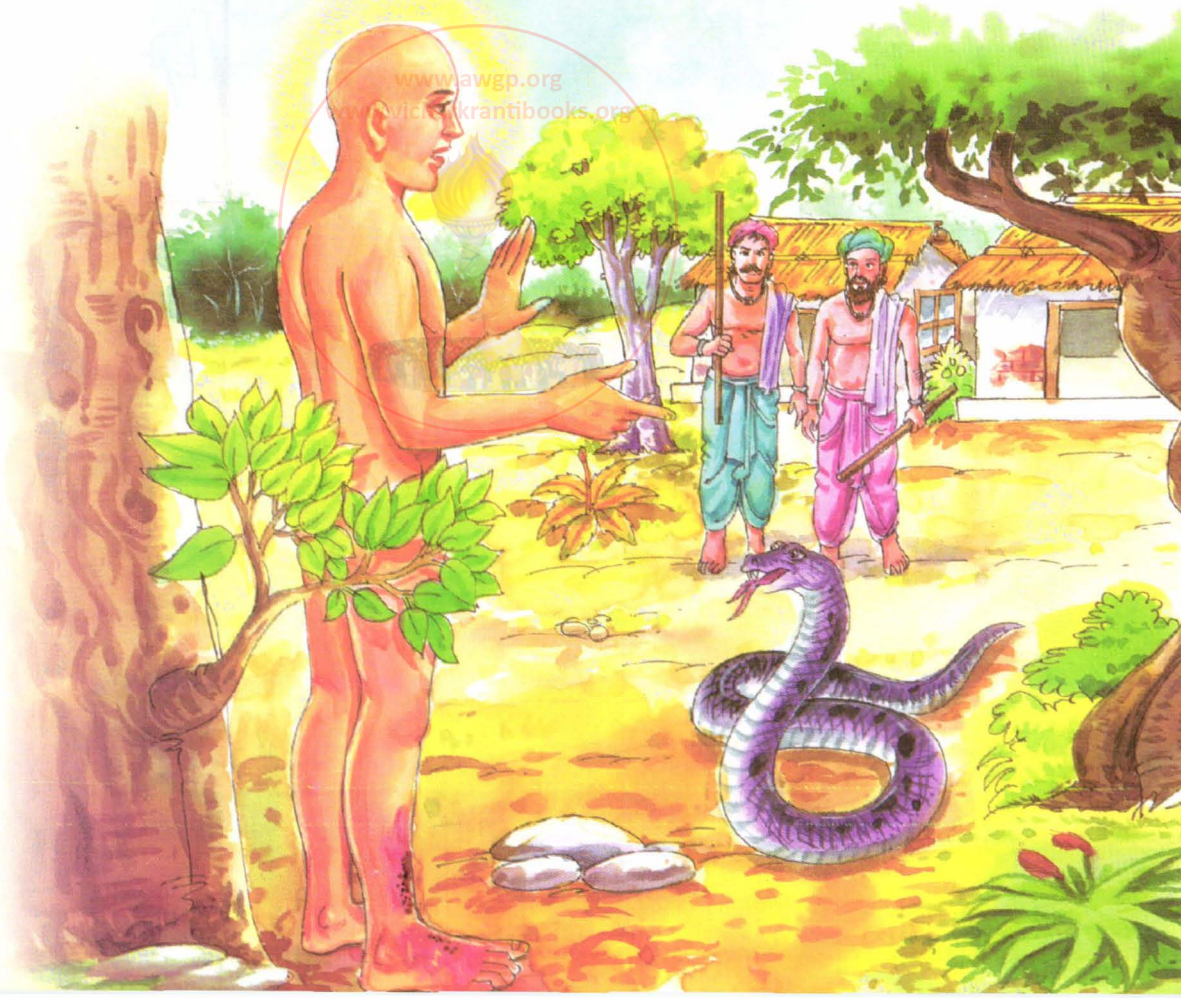

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु गोविंदसिंह के पाँच प्यारे

गुरु गोविंदसिंह ने एक नरमेध यज्ञ किया। उक्त अवसर पर उन्होंने घोषणा की—"भाइयो! देश की स्वाधीनता पाने और अन्याय से मुक्ति के लिए चंडी बलिदान चाहती है, तुममें से जो अपना सिर दे सकता हो वह आगे आए।" गुरु गोविंदसिंह की माँग का सामना करने का किसी में साहस नहीं हो रहा था, तभी दयाराम नामक एक युवक आगे बढ़ा। गुरु उसे एक तरफ ले गए और तलवार चला दी, रक्त की धार बह निकली, लोग भयभीत हो उठे। तभी गुरु गोविंदसिंह फिर सामने आए और पुकार लगाई, अब कौन सिर कटाने आता है। एक-एक कर क्रमशः धर्मदास, मोहकमचंद, हिम्मतराय तथा साहबचंद आए और उनके शीश भी काट लिए गए। बस अब मैदान साफ था कोई आगे बढ़ने को तैयार न हुआ। गुरु गोविंदसिंह अब उन पाँचों को बाहर निकाल लाए। विस्मित लोगों को बताया यह तो निष्ठा और सामर्थ्य की परीक्षा थी, वस्तुतः सिर तो बकरों के काटे गए। तभी भीड़ में से 'हमारा बलिदान लो, हमारा भी बलिदान लो' की आवाज आने लगी। गुरु ने हँसकर कहा—"यह पाँच ही तुम पाँच हजार के बराबर हैं। जिनमें निष्ठा और संघर्ष की शक्ति न हो उन हजारों से निष्ठावान पाँच अच्छे।" इतिहास जानता है कि इन्हीं पाँच प्यारों ने सिख संगठन को मजबूत बनाया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जो अवतार प्रकटीकरण के समय सोए नहीं रहते, परिस्थिति और प्रयोजन को पहचान कर इनके काम में लग जाते हैं, वे ही श्रेय-सौभाग्य के अधिकारी होते हैं, अग्रगामी कहलाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सीखने की कोई आयु नहीं होती

एक बार स्वामी रामतीर्थ अपनी यात्रा पर निकले। स्वामी रामतीर्थ जब जापान गए तो उनकी भेंट वहाँ एक वृद्ध से हुई। दुबली-पतली काया का यह बूढ़ा ७५ वर्ष की आयु में भी जवान व्यक्ति जैसे उत्साह से जर्मन भाषा सीख रहा था। स्वामीजी ने पूछा—"बाबा! इस उम्र में यह भाषा सीखकर आप क्या करेंगे?" वृद्ध बोला—"स्वामीजी! सीखने के लिए कोई उम्र नहीं होती। मैंने प्राणिविज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है, जर्मन भाषा में इस विषय पर कई अच्छी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। मैं उनका जापानी में अनुवाद करूँगा ताकि हमारे देशवासी भी उससे लाभ उठा सकें।" उसके उत्साह और राष्ट्र की शैक्षणिक प्रगति के लिए अत्यधिक लालसा को देख स्वामी रामतीर्थ ने श्रद्धा से उसके पैर छूए और कहा—"मैं समझ गया, अब जापान को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता।"

जिस देश में ऐसे व्यक्ति होते हैं,वह देश अवश्य उन्नति करता है।

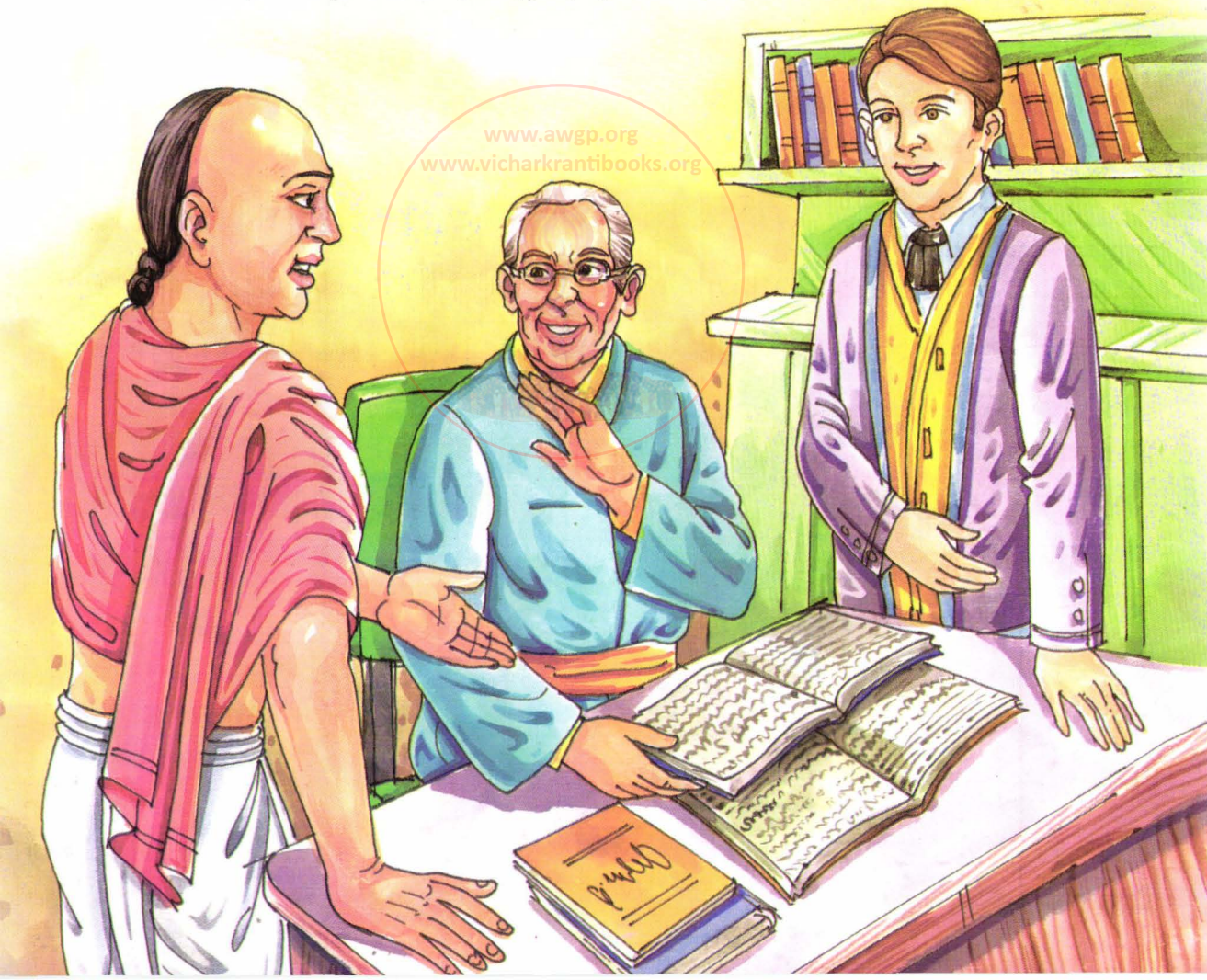

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु नानकदेव के उपदेश

गुरु नानकदेव के उपदेश क्रियात्मक होते थे। एक बार जब वे तीर्थयात्रा करते हुए हरिद्वार पहुँचे और पंडाओं द्वारा लोगों को तर्पण कराते देखा तो वे भी गंगाजी में खड़े होकर पूर्व के बजाय पश्चिम को पानी उछालने लगे। लोगों ने उनको मूर्ख समझकर पूर्व दिशा में जल देने को बताया। उन्होंने कहा—"मेरा गाँव तो पश्चिम की दिशा में है और मैं चाहता हूँ कि यहाँ जल छोड़कर अपने खेतों की सिंचाई करूँ।" लोगों ने उनकी हँसी उड़ाकर कहा—"कहीं इतनी दूर से खेत सींचे जाते हैं?" नानकजी ने उत्तर दिया—"अगर तर्पण का जल परलोक में पितरों के पास पहुँच जाएगा तो मेरा जल दो-तीन सौ कोस के फासले पर खेतों तक क्यों नहीं पहुँच सकता?" लोग निरुत्तर रह गए।

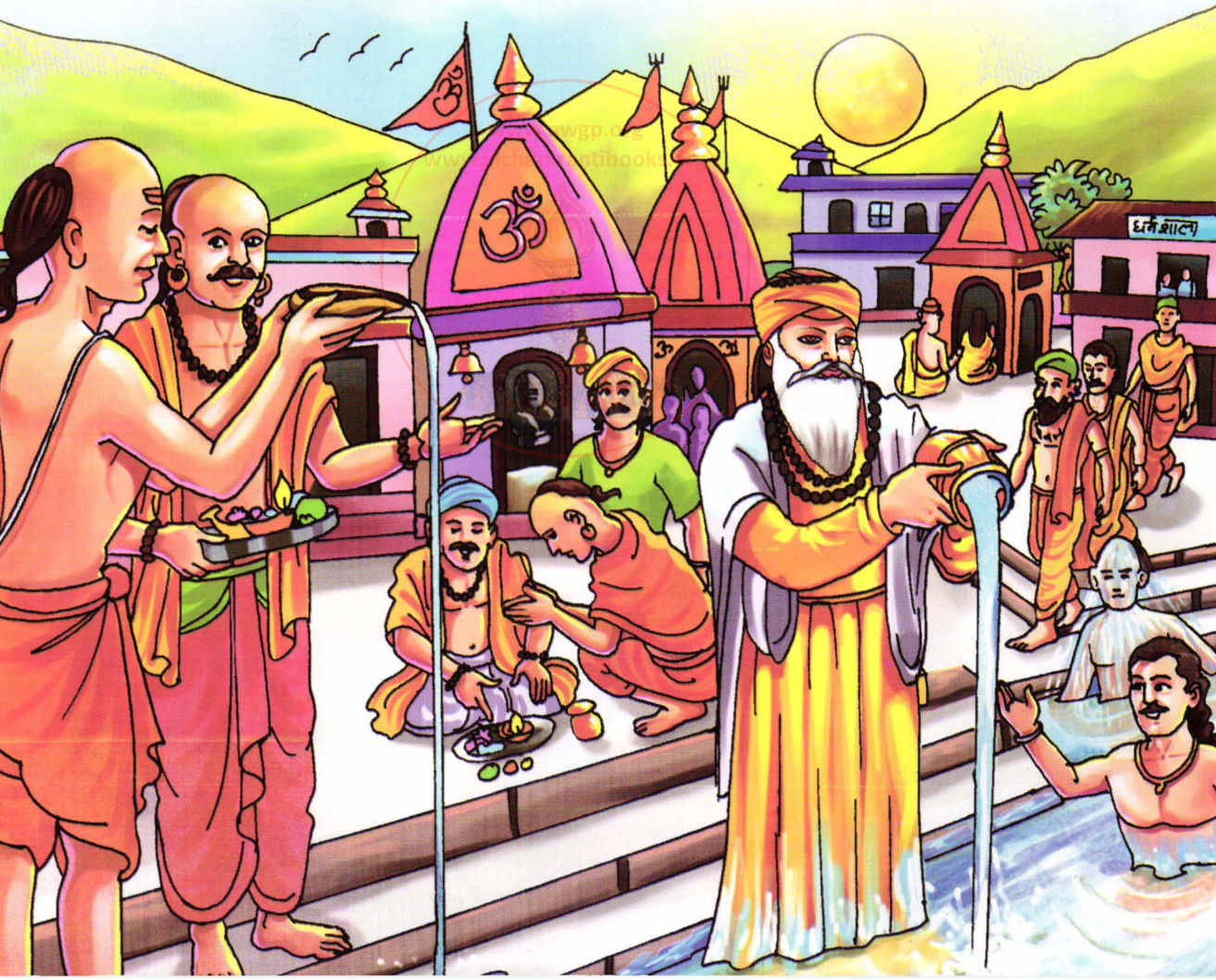

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वास दांपत्य जीवन की आधारशिला

एक बार दिन में संत कबीर अपने दरवाजे पर बैठे ग्रामवासियों को उपदेश दे रहे थे। तभी एक युवक ने पूछा—"महाराज! यह तो बताइए कि विवाह करना ठीक होता है या नहीं?" कबीर एक क्षण चुप रहे फिर अपनी पत्नी को आवाज देकर बुलाया और कहा—"देख! यहाँ बड़ा अंधकार फैला है। दीपक तो जलाकर ले आ।" धर्मपत्नी घर गईं और दीपक जलाकर ले आईं। युवक हँसकर बोला—"महाराज! आप तो विलक्षण हैं ही आपकी पत्नी भी खूब हैं। आप दिन को रात बताते हैं तो पत्नी ने दीपक लाकर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आपकी बात का समर्थन भी कर दिया।'' यह तो एक सुंदर नाटक रहा। कबीर हँसकर बोले—''नाटक नहीं, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर। यदि युवक-युवती एक दूसरे पर इतना प्रगाढ़ विश्वास रख सकें तो ही उन्हें विवाह करना चाहिए।''

पति-पत्नी में विश्वास होना बहुत आवश्यक होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचारों का महत्त्व

अध्यात्मवेत्ता स्वामी रामतीर्थ अमेरिका में महिलाओं की शंकाओं का समाधान कर रहे थे। धर्म की अनेक गुत्थियाँ सुलझाते जा रहे थे। तब तक एक युवती पूछ बैठी—''कृष्ण अधिकतर गोपियों के मध्य रहते थे। क्या युवतियों के मध्य घिरा रहने वाला व्यक्ति पवित्र हो सकता है ?'' स्वामीजी ने कहा—''इसमें भी कोई शंका की बात है। व्यक्ति के चरित्र का संबंध तो उसके विचारों से है। विचारों की पवित्रता उसे कभी विचलित नहीं होने देती।''

युवती ने कहा—''मैं इस बात पर विश्वास नहीं करती।'' इतना सुनते ही बिना कुछ कहे-सुने स्वामीजी अपना आसन छोड़कर भागने लगे। काफी दूर निकल जाने पर वह खड़े होकर पीछे की ओर देखने लगे। उनमें से अधिकतर महिलाएँ स्वामीजी के पीछे-पीछे दौड़कर आ रही थीं। जब वे सभी महिलाएँ निकट आ गईं तो स्वामी जी ने पूछा—''अच्छा बताइए क्या मैं अपवित्र हो गया ?'' महिलाओं ने कहा—''नहीं! बिलकुल नहीं!!'' स्वामीजी बोले—''फिर योगिराज कृष्ण को गोपियों से घिरे रहने पर कैसे अपवित्र कहा जा सकता है ?''

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

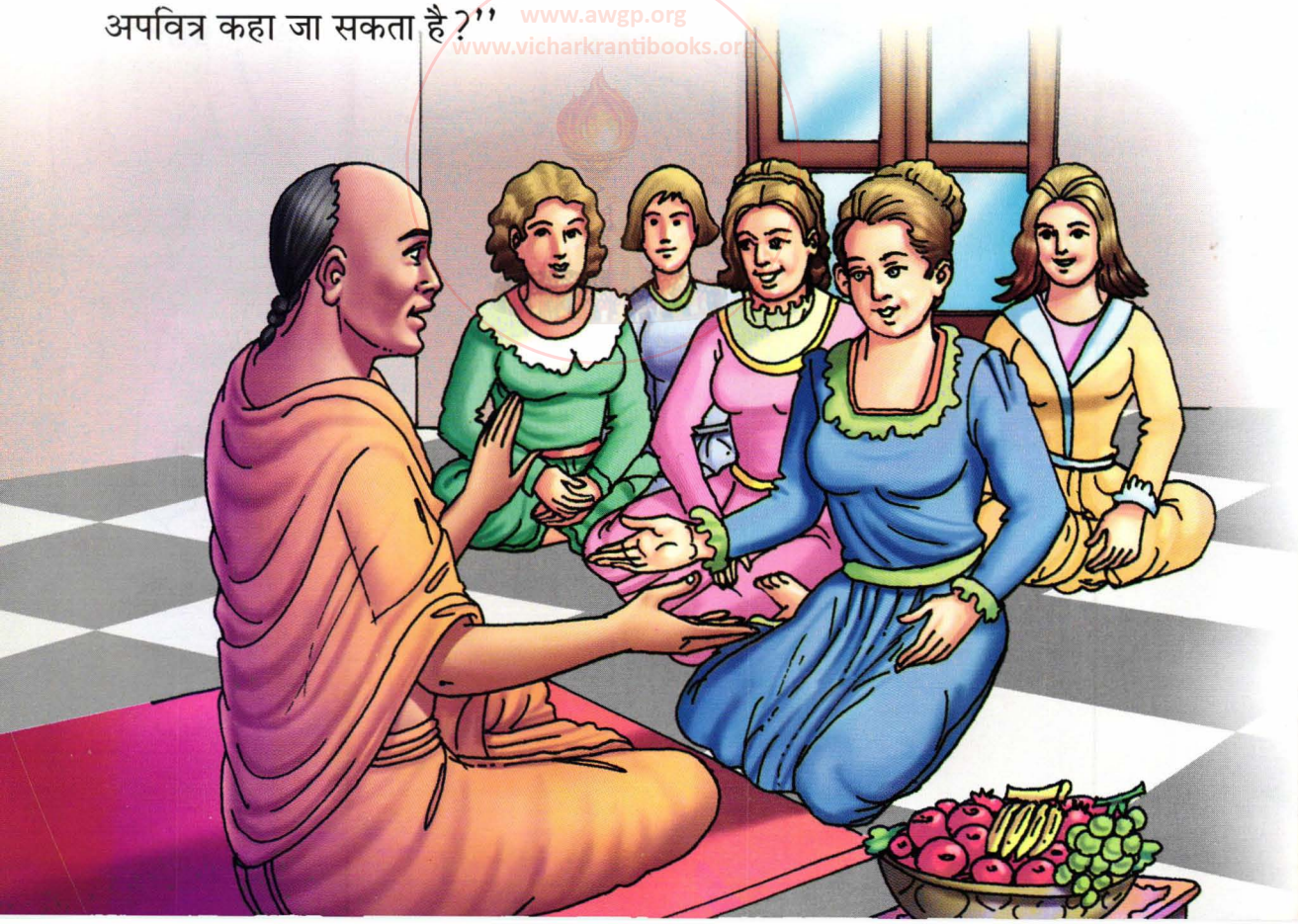

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुरे कर्मों का नतीजा

भगवान महावीर आत्मसंयम की साधना में उन दिनों लीन थे। उन्हें क्रोधित करने के लिए संगम नामक एक दुष्ट पीछे पड़ा हुआ था। वह चाहता था कि महावीर को किसी प्रकार क्रोध आ जाए।

एक दिन उसने खौलता दूध उनके ऊपर उलट दिया तो भी वे अविचल भाव से अपनी साधना में निरत रहे।

दुष्ट संगम पछताने लगा और दया आ गई। वह अपने बुरे कार्य पर आँसू बहाता, क्षमा माँगता विदा होने लगा।

भगवान की आँखें भी नम हो गईं। वे बोले—"तात! इन गलत कार्यों का दुष्परिणाम तुम्हें कितना कष्टकारक होगा; यही सोचकर मुझे दुःख हो रहा है दूध से जलने पर उठे हुए फफोले देखकर नहीं।"

बुरे कामों का फल बुरा होता है। कभी-न-कभी उसका फल अवश्य ही भुगतना पड़ता है।

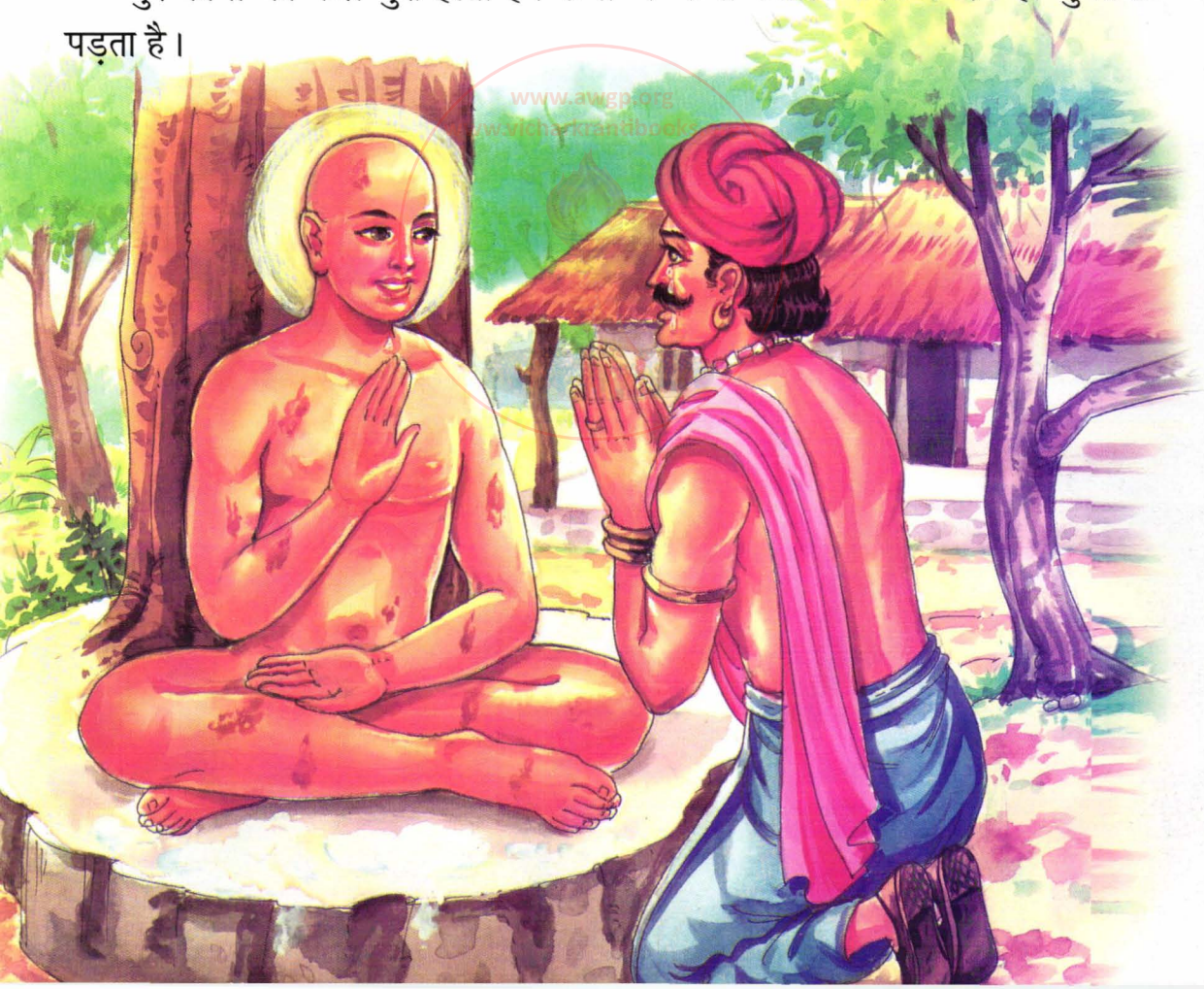

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा के दिव्य अनुदान

एक जगह संत ज्ञानेश्वर अपनी कथा में समझा रहे थे कि ज्ञान, विवेक, शक्ति और भक्ति परमात्मा सत्पात्रों को देता है। संत ज्ञानेश्वर के ऐसा कहने पर एक महिला नाराज हो उठी, वह बोली—"तो इसमें भगवान की क्या विशेषता रही ? उसे तो सबको समान अनुदान देना चाहिए।" संत उस समय तो चुप हो गए। उस दिन की बात समाप्त हो गई। दूसरे दिन प्रातःकाल संत ने मुहल्ले के एक मूर्ख व्यक्ति को बुलाकर कहा कि अमुक स्त्री से जाकर आभूषण माँग लाओ। मूर्ख गया और आभूषण माँगे। उस महिला ने झिड़ककर उसे बिना आभूषण दिए भगा दिया।

थोड़ी देर बाद संत ज्ञानेश्वर स्वयं उस महिला के यहाँ पहुँचे और बोले—"आप

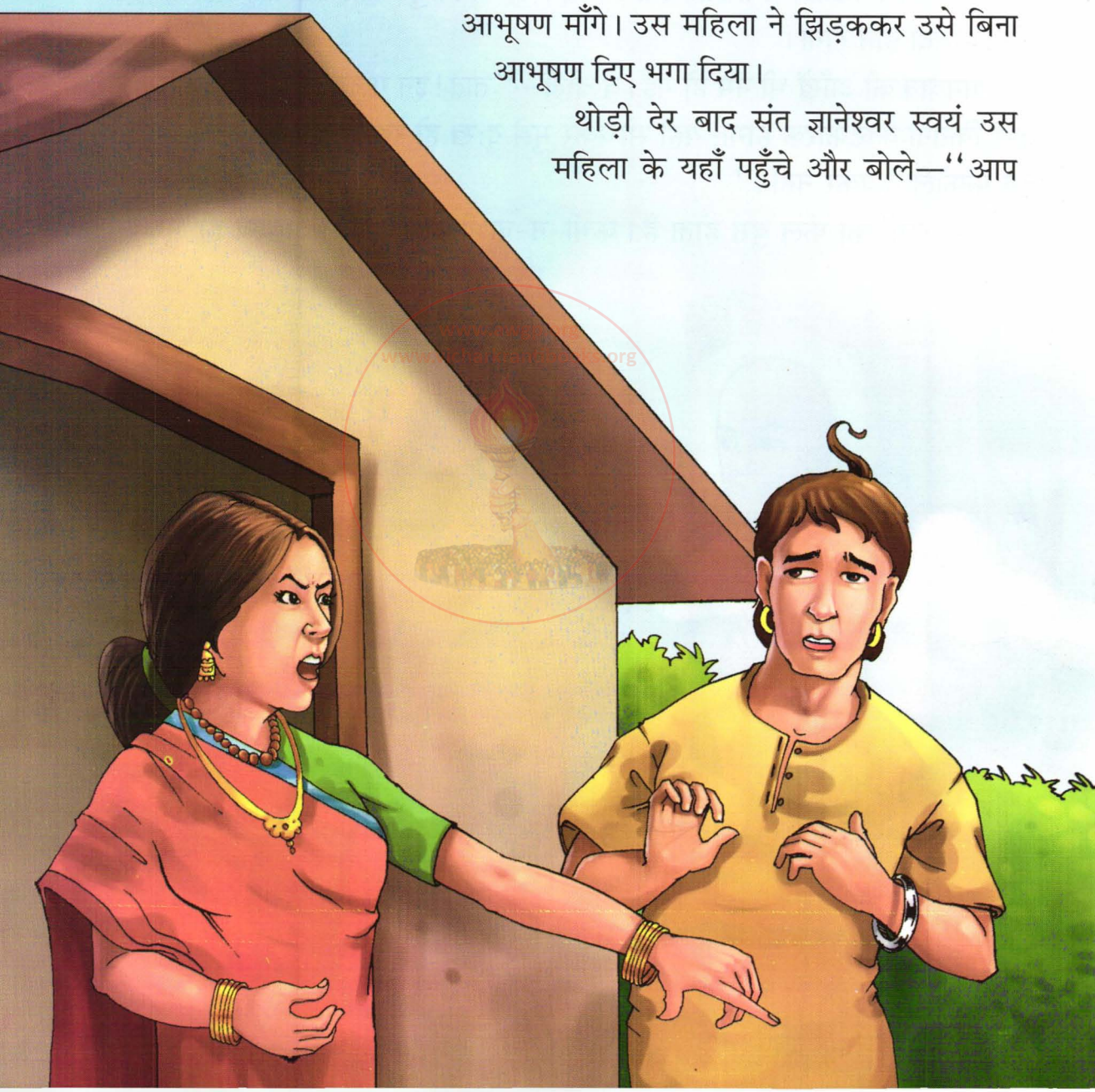

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक दिन के लिए अपने आभूषण दे दें। आवश्यक काम करके लौटा देंगे।'' महिला ने बिना कोई प्रश्न पूछे संदूक खोला और सहर्ष अपने आभूषण सौंप दिए। आभूषण हाथ में लिए संत ने पूछा—''अभी-अभी दूसरा व्यक्ति आया था। आपने उसे आभूषण क्यों नहीं दिए?'' महिला बोली—''उस मूर्ख को कैसे मूल्यवान आभूषण दे दें?'' संत ज्ञानेश्वर मुस्कराए और बोले—''बहन! जब अपने सामान्य से आभूषण बिना सोचे-विचारे कुपात्र को नहीं दे सकतीं तो फिर परमात्मा अपने दिव्य अनुदानों को कुपात्रों को कैसे सौंप सकता है। वह तो बारंबार इस बात की परीक्षा करता है कि जिसको अनुदान दिया जा रहा है उसमें पात्रता है अथवा नहीं।''

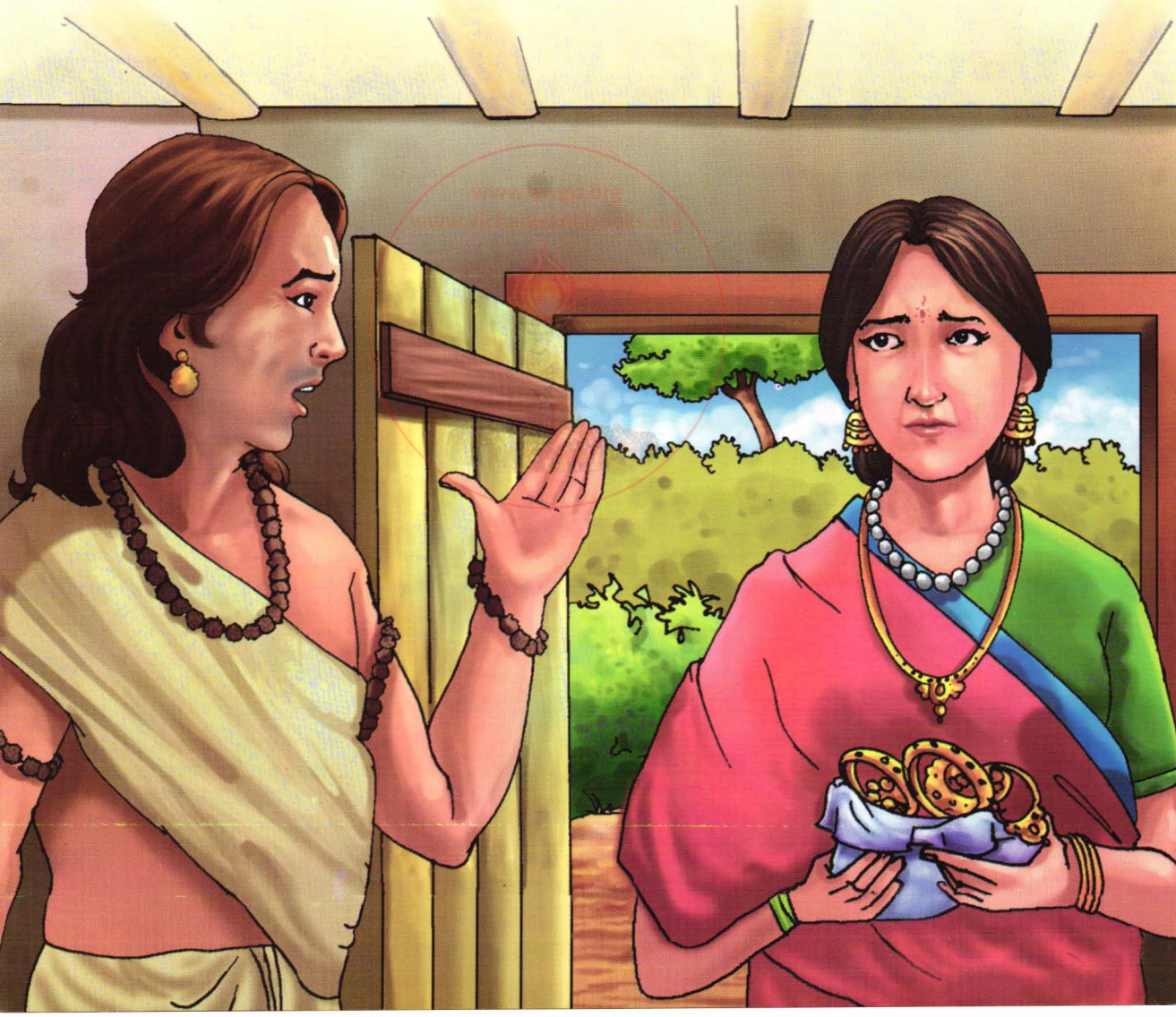

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खुदा का घर किधर ?

एक बार गुरु नानक पश्चिमी देशों की यात्रा करते हुए मक्का पहुँचे तो अनजाने में काबा की तरफ पैर कर सो गए। किसी मुसलमान मुल्ला ने देखा तो उनको फटकारा— "कैसे बेवकूफ हो जो खुदा के घर की तरफ पैर करके सो रहे हो!" नानक ने कहा— "मुल्ला जी! मैं अजनबी हूँ, मेहरबानी करके मेरे पैरों को आप ही उस दिशा में कर दें जिस तरफ खुदा का घर न हो।" मुल्ला सोचने लगा कि खुदा तो सब जगह व्याप्त है, मैं किस तरह उनके न होने की बात कह सकता हूँ? वह चुपचाप वहाँ से चला गया।

उसकी समझ में आया कि भगवान तो हर तरफ चारों दिशाओं में हैं।

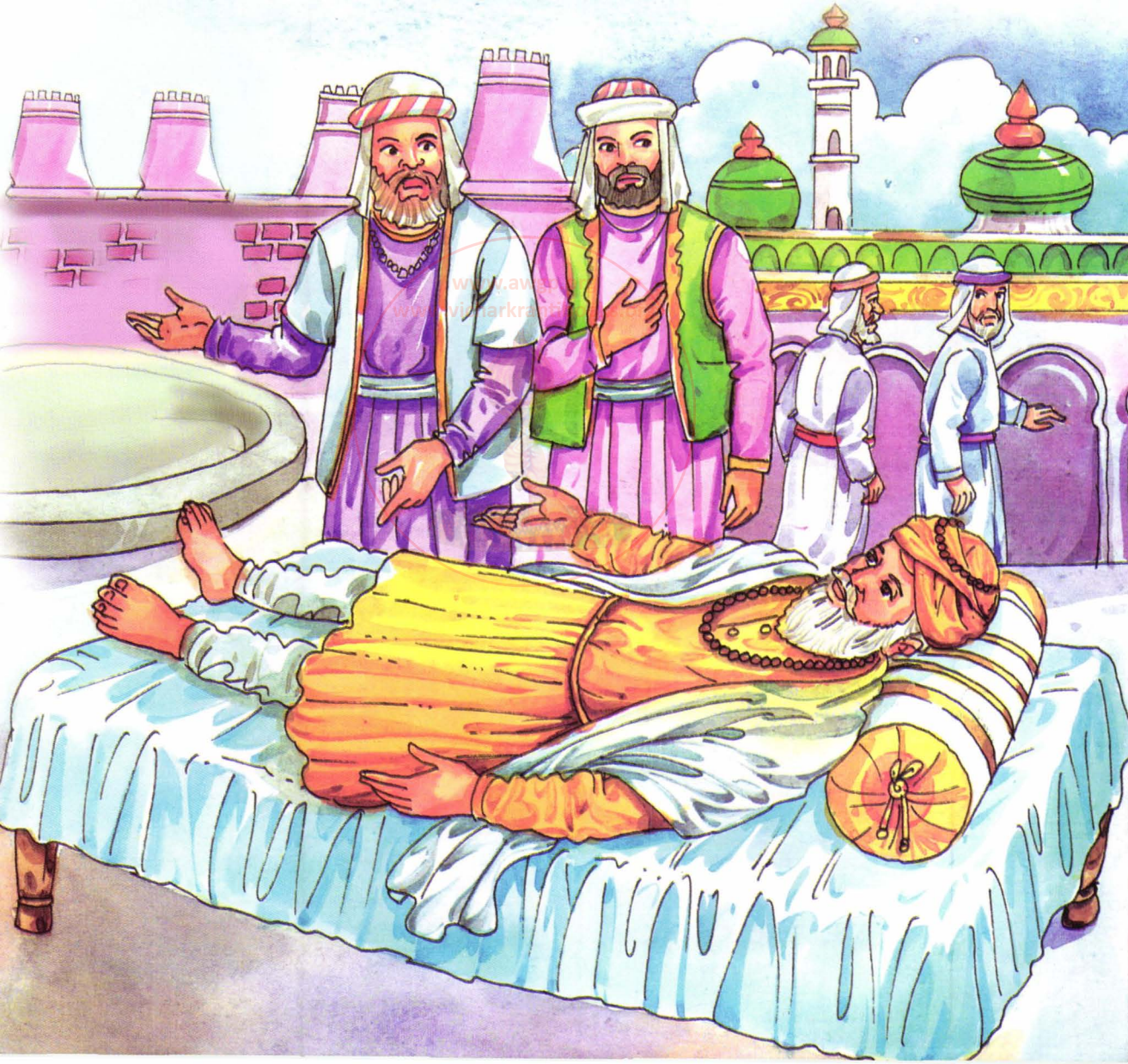

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान लोभ-मोह रहित हैं

रामकृष्ण परमहंस के शिष्य मथुरा बाबू ने एक मंदिर बनवाया और उसमें विष्णु भगवान की मूर्ति स्थापित करा दी गई। मूर्ति बड़ी लुभावनी थी। वस्त्राभूषण से साज-सँवार की गई थी। कुछ ही दिन बीते होंगे कि चोर मूर्ति के कीमती आभूषणों को चुरा ले गए। प्रतिमा अब उतनी आकर्षक नहीं लगती थी। मथुरा बाबू उदास होकर बोले—"भगवन्! आपके हाथ में गदा और चक्र दो- दो हथियार लगे रहे फिर भी चोर आपके आभूषण चुराकर ले गए। इससे तो हम मनुष्य अच्छे। कुछ तो प्रतिरोध करते ही हैं। पास खड़े रामकृष्ण भी यह वार्त्तालाप सुन रहे थे। वे बोल पड़े—"मथुरा बाबू!" भगवान को गहनों और जेवरों का तुम्हारी तरह लोभ और मोह नहीं है और फिर उनके भंडार में कमी किस बात की है जो रातभर जागते और तुच्छ गहनों की रखवाली करते।" भगवान मनुष्यों की तरह नहीं है भगवान लोभ-मोह से दूर रहते हैं।

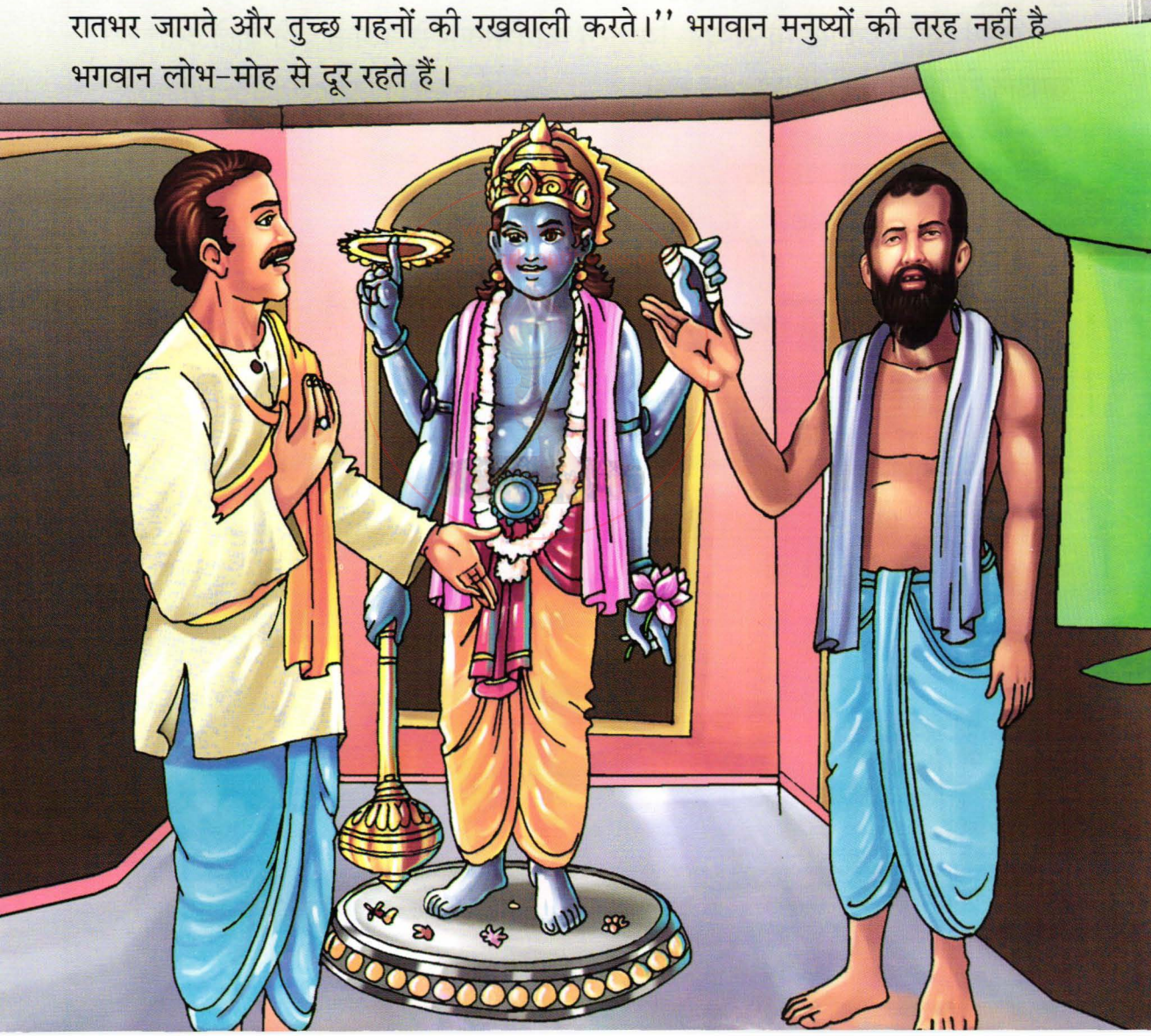

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृष्टिकोण की भिन्नता

संत कबीरदास सिद्धपुरुष की तरह प्रख्यात हो गए। कभी-कभी दूर-दूर से जिज्ञासु लोग आते थे। तब भी वे पहले की तरह ही कपड़ा बुनते रहते और साथ-साथ सत्संग भी करते रहते थे। बहुत दिनों बाद शिष्यों में से एक ने पूछा—"आप जब साधारण थे,तब कपड़ा बुनना ठीक था, पर अब जबकि सिद्धपुरुष हो गए और निर्वाह में कमी नहीं रही तो आप कपड़ा क्यों बुनते हैं ?"

कबीर ने सरल भाव से कहा—"पहले मैं पेट पालने के लिए बुनता था। पर अब मैं जन-समाज में समाए हुए भगवान का तन ढकने और अपने मन की एकाग्रता के लिए बुनता हूँ।" ये जनता मेरे लिए भगवान के समान है।

कार्य वही रहने पर भी सोचने-विचारने की भिन्नता से उत्पन्न होने वाले अंतर को समझने से शिष्य का समाधान हो गया।

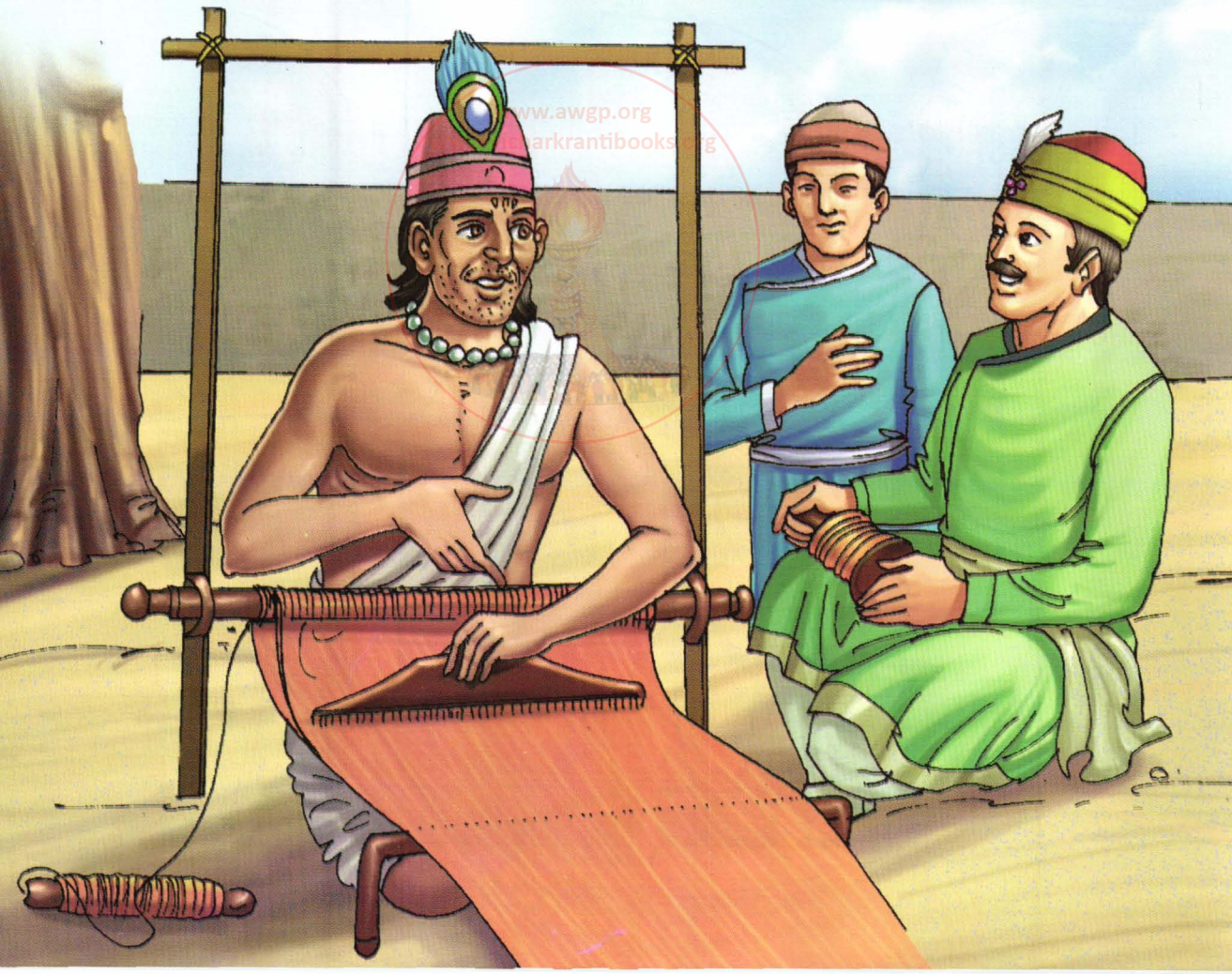

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माँ की सादगी

रामकृष्ण परमहंस की माता एक बार कलकत्ता आईं और कुछ समय स्नेहवश पुत्र के पास रहीं। दक्षिणेश्वर मंदिर की स्वामिनी रासमणि ने उन्हें गरीब और सम्मान के योग्य महिला समझकर तरह-तरह के कीमती उपहार भेंट किए। वृद्धा ने उन सभी को अस्वीकार कर दिया और मान रखने के लिए एक इलायची भर स्वीकार की। उपस्थित लोगों ने कहा—"ऐसी माताएँ ही परमहंस जैसे पुत्र को जन्म दे सकती हैं।"

माता के अच्छे गुण और संस्कार बच्चों को महान बनाते हैं।

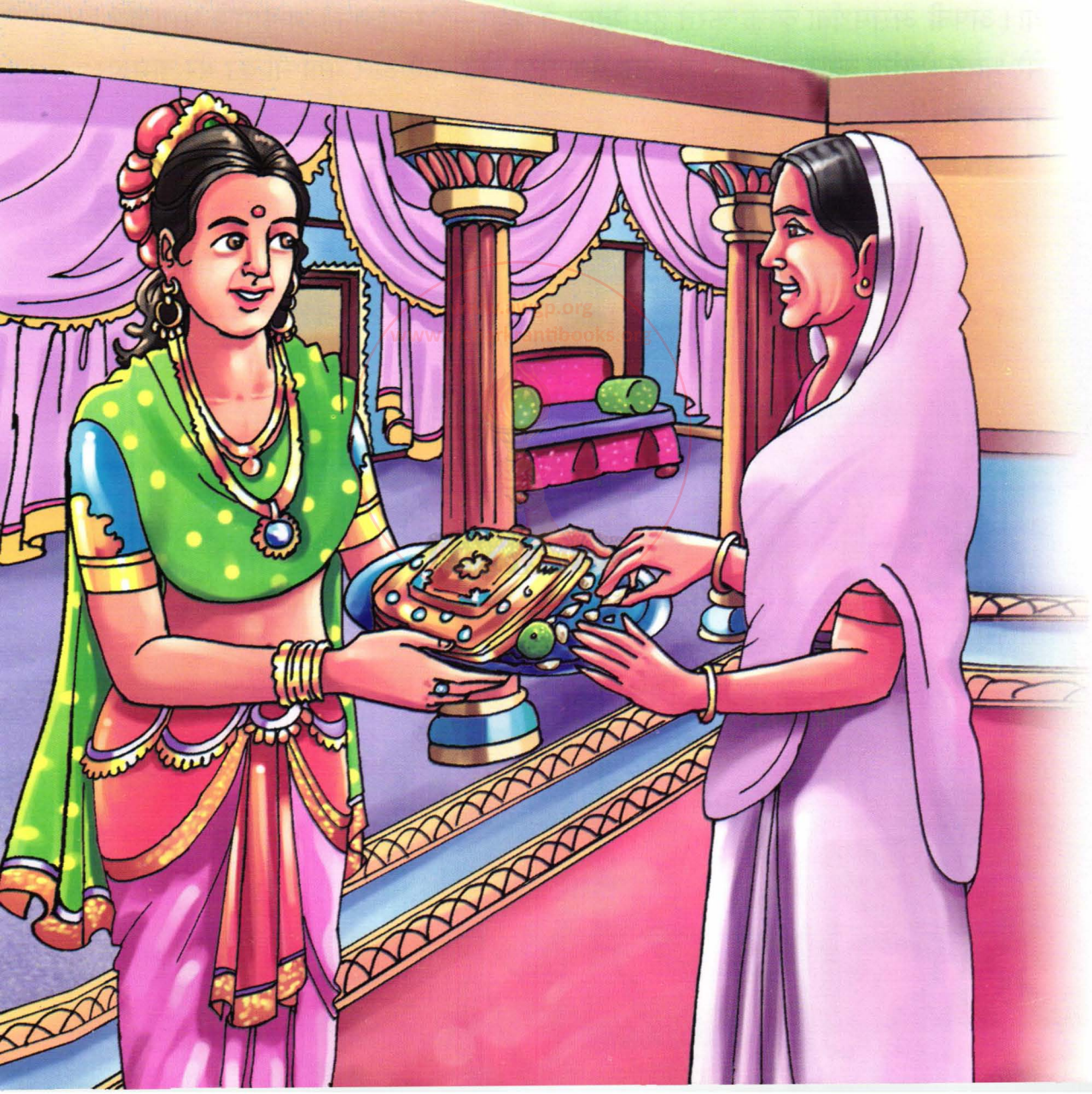

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रैदास के पैसे

संत रैदास मोची का काम करते थे। काम को वे भगवान की पूजा मानकर पूरी लगन एवं ईमानदारी से पूरा करते थे। एक साधु को सोमवती अमावस्या के दिन गंगा स्नान करने को साथ-साथ चलने के लिए उन्होंने आश्वासन दिया था। साधु सदा जप-तप में तल्लीन रहते थे।

अमावस्या के स्नान का दिन निकट था। साधु रैदास के पास पहुँचे। गंगा स्नान की बात याद दिलाई। रैदास लोगों के जूते सीने का काम हाथ में ले चुके थे। समय पर देना था। अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए रैदास ने कहा—"महात्मन! आप मुझे क्षमा करें। मेरे भाग्य में गंगा का स्नान नहीं है। यह एक पैसा लेते जाएँ और गंगा माँ को मेरे नाम पर चढ़ा देना।"

साधु गंगा स्नान के लिए समय पर पहुँचे। स्नान करने के बाद उन्हें रैदास की बात स्मरण हो आई। मन ही मन गंगा से बोले—"माँ! यह पैसा रैदास ने

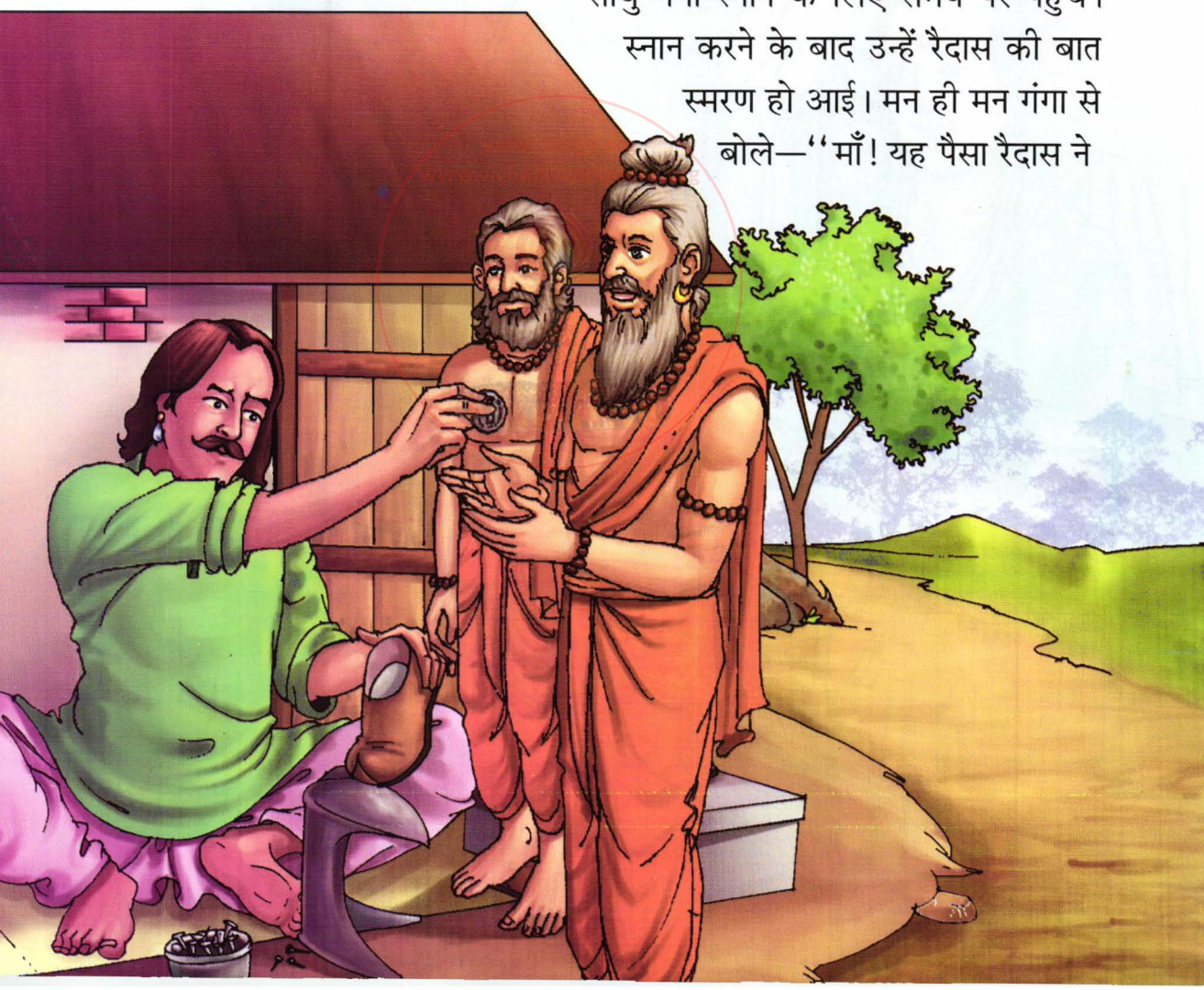

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भेजा है, स्वीकार करें।'' इतना कहना था कि गंगा की अथाह जलराशि से दो विशाल हाथ बाहर उभरे और पैसे को हथेली में ले लिया। साधु यह दृश्य देखकर विस्मित रह गए और सोचने लगे, मैंने इतना जप-तप किया, गंगा आकर स्नान किया तो भी गंगा माँ की कृपा नहीं प्राप्त हो सकी, जबकि गंगा का बिना स्नान किए ही रैदास को अनुकंपा प्राप्त हो गई।

वे रैदास के पास पहुँचे और पूरी बात बताई। रैदास बोले—''महात्मन! यह सब कर्त्तव्य धर्म के निर्वाह का प्रतिफल है। इसमें मुझ अकिंचन के तप, पुरुषार्थ की कोई भूमिका नहीं।''

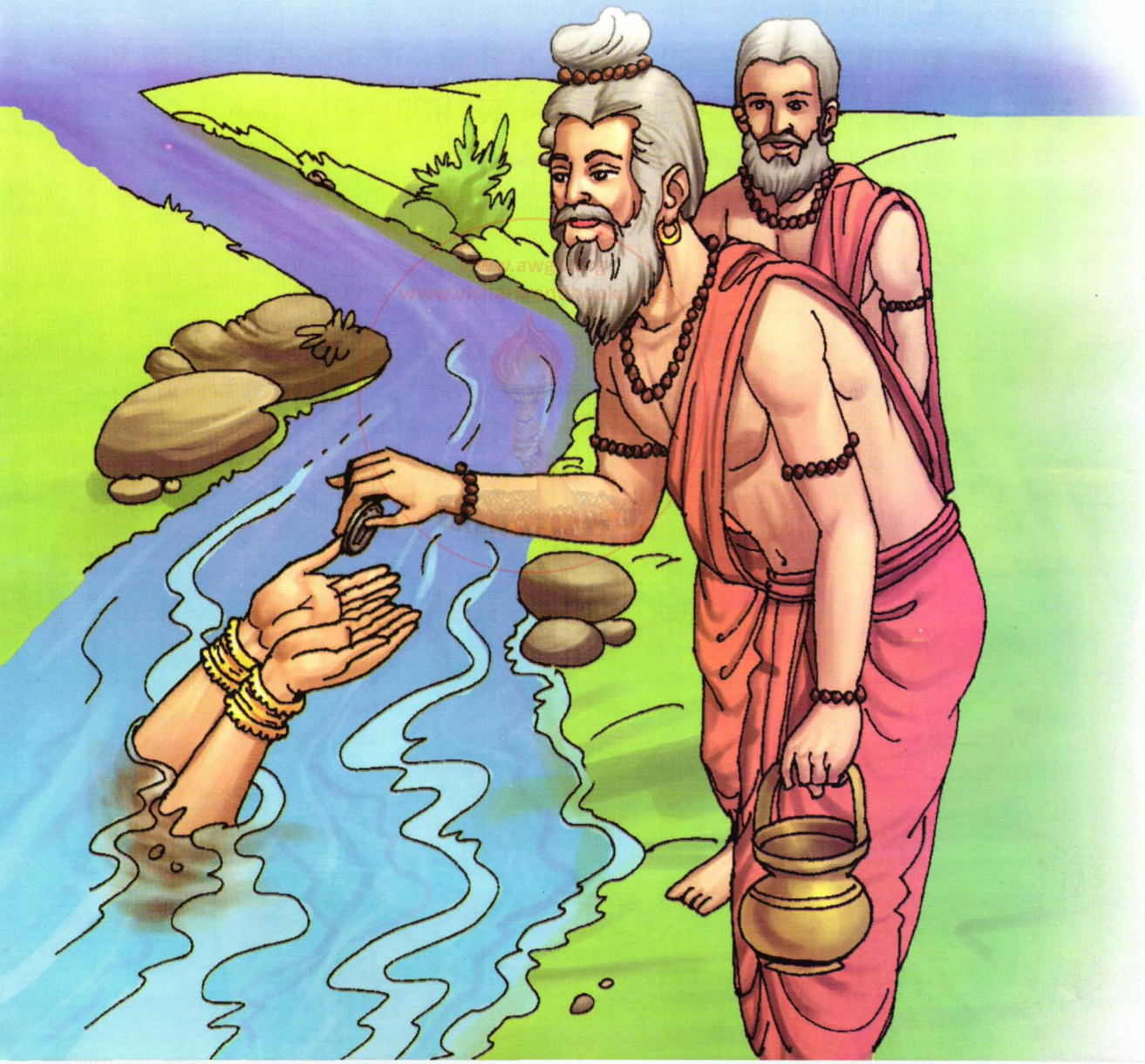

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिल-बाँटकर खाना

संत तुकाराम को कहीं से कुछ गन्ने प्राप्त हुए। वे उन्हें लेकर घर आ रहे थे। रास्ते में बच्चे मिलते गए। बालक संत की सरल प्रकृति को जानते थे। वे गन्ने माँगते गए और संत उन्हें एक-एक बाँटते गए। घर पहुँचते-पहुँचते केवल एक गन्ना शेष रहा। शेष रास्ते में बालकों को ही बँट गए। तुकाराम की पत्नी को गन्ना घर आने की पूर्व सूचना मिल चुकी थी, वह बहुत गन्ने घर आने की आशा लगाए बैठी थी। हाथ में केवल एक ही गन्ना देखकर कर्कश स्वभाव के कारण और भी क्रोध में भर गईं। कारण पूछा तो तुकाराम ने सारी बात सरलतापूर्वक बता दी। क्रुद्ध पत्नी ने वह एक गन्ना भी उनकी पीठ पर दे मारा। गन्ने के दो टुकड़े हो गए।

हँसते हुए संत तुकाराम ने कहा—"देवि, तुमने ठीक बँटवारा कर दिया। इन दो टुकड़ों में से एक तुम ले लो, दूसरा मुझे दे दो। जो कुछ थोड़ा-बहुत भगवान ने दिया है, उसे मिल-बाँटकर खाना ही ठीक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु की परीक्षा

यह उस समय की घटना है जब स्वामी विवेकानंद अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की ओर आकृष्ट हुए ही थे। तब उनका नाम नरेंद्र दत्त था। रामकृष्ण परमहंस महान संत थे। उन्हें धन-दौलत से एकदम घृणा थी। वे रुपये-पैसे, सोना-चाँदी को छूते तक न थे। नरेंद्र दत्त को इस पर विश्वास नहीं हुआ। वे सोच भी नहीं सकते थे कि ऐसा भी मनुष्य हो सकता है, जो रुपये-पैसे को छुए भी नहीं। उन्होंने गुरु की परीक्षा लेने का निश्चय किया। रामकृष्ण परमहंस बाहर गए हुए थे तो उन्होंने चुपचाप उनके बिस्तर के नीचे एक रुपया रख दिया। फिर आकर अन्य लोगों के बीच बैठ गए। रामकृष्ण जी आए और बिस्तर पर बैठ गए। अचानक वह हड़बड़ाकर उठ बैठे। सभी लोग इधर-उधर देखने लगे कि वे इस प्रकार क्यों खड़े हो गए हैं। परंतु उनकी समझ में कुछ न आया। तब रामकृष्ण परमहंस ने बिस्तर हटाया। नीचे एक रुपया पड़ा था। सभी दंग रह गए। उधर नरेंद्र दत्त सिर झुकाए गंभीर मुद्रा में बैठे थे।

रामकृष्ण परमहंस उनकी शरारत समझ गए। वे मुस्कराकर बोले—"नरेंद्र! गुरु की परीक्षा ले रहे थे? ठीक ही है। गुरु धारण करने से पहले गुरु की परीक्षा अवश्य लेनी चाहिए।"

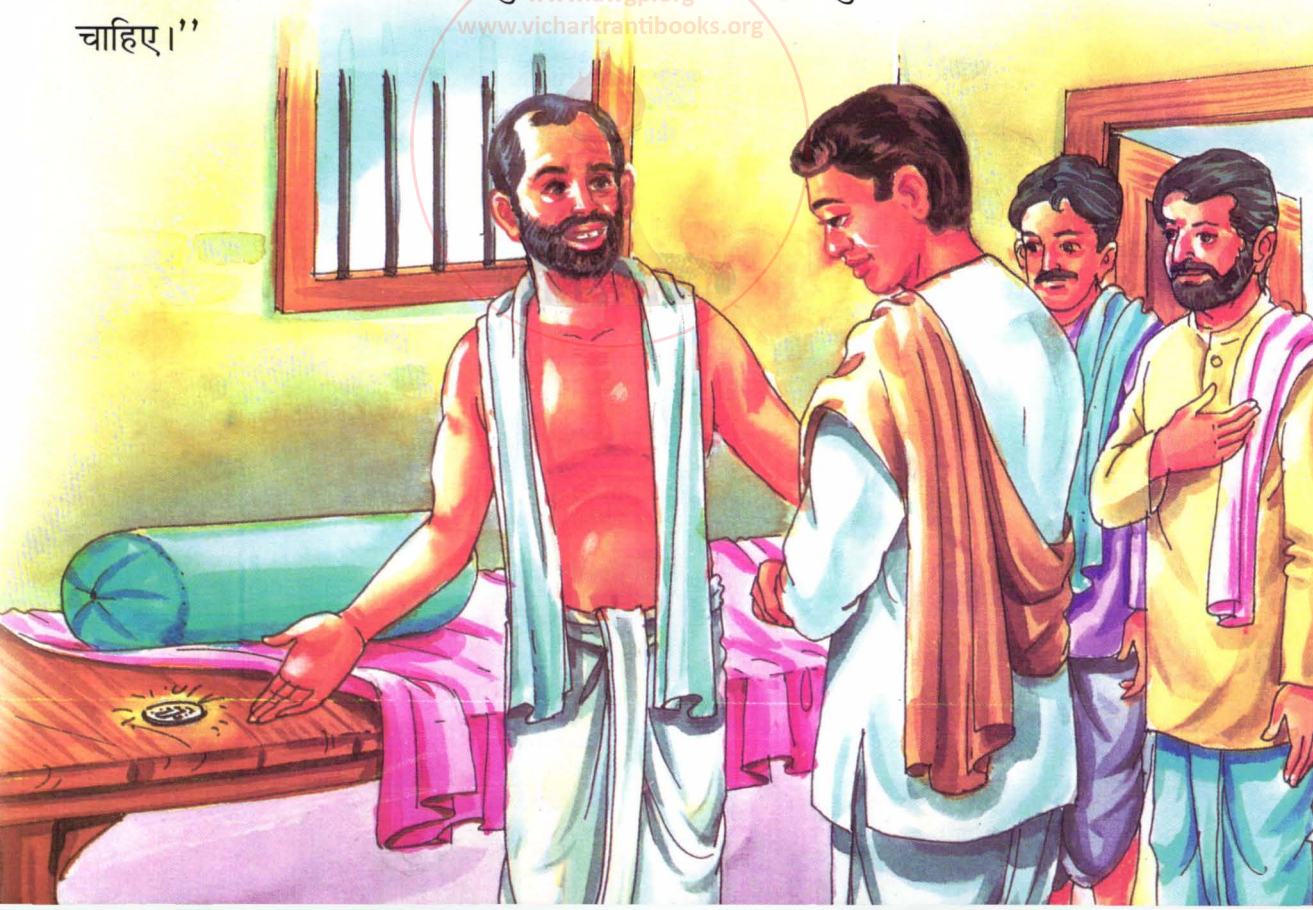

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वयं आगे बढ़ें

स्वामी रामतीर्थ उस समय प्रोफेसर थे। कक्षा में एक दिन ब्लैकबोर्ड पर लाइन खींचकर स्वामी रामतीर्थ बोले—"कोई बालक इसे मिटाए बिना छोटा कर सकता है ?" एक कुशाग्र बुद्धि बालक उठा और लाइन के पास उससे बड़ी लाइन खींचकर बोला—"गुरुदेव! देखो यह छोटी हो गई।" स्वामी रामतीर्थ ने छात्रों को समझाया—"बच्चो! इसी तरह स्वयं ऊँचा उठने के लिए दूसरों को नीचा न दिखाकर अपने गुण, कर्म और स्वभाव को श्रेष्ठ बनाना चाहिए।"

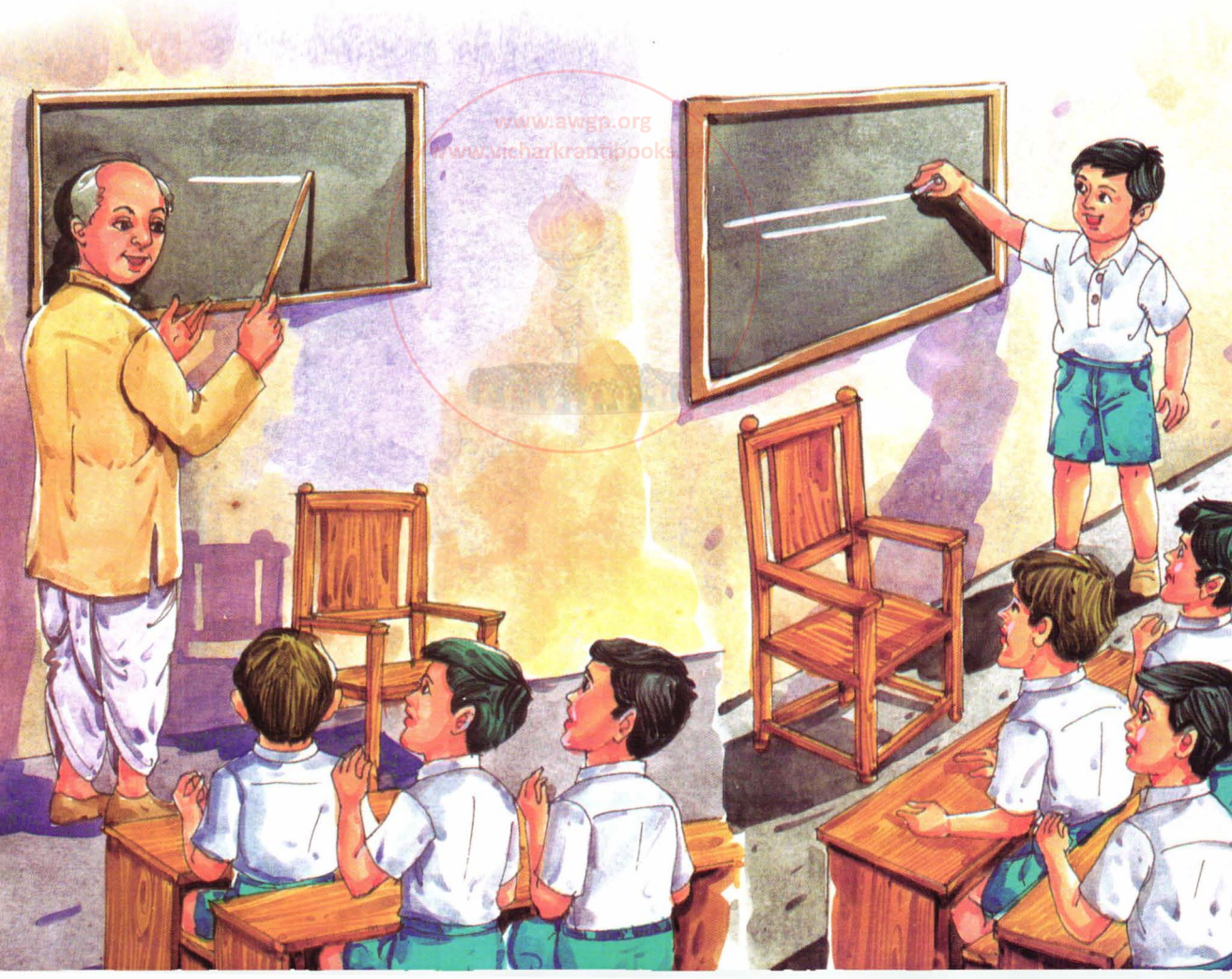

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमहंस की विनम्रता

डॉ० महेन्द्रनाथ सरकार कलकत्ता (कोलकाता) के एक बहुत प्रसिद्ध और धनी डॉक्टर थे। एक बार वे सुप्रसिद्ध संत श्री रामकृष्ण परमहंस से मिलने गए। उस समय परमहंस जी बगीचे में टहल रहे थे। वे इतने सीधे और सादगी से भरे थे कि डॉ० सरकार ने उन्हें माली समझा।

सरकार ने आवाज लगाकर कहा—"ऐ माली! थोड़े से फूल तो लाकर दे। परमहंस जी को भेंट करने हैं।" परमहंस जी ने तुरंत ही अच्छे-अच्छे फूल तोड़कर उन्हें दे दिए।

थोड़ी देर बाद सत्संग शुरू हुआ। डॉ० सरकार लज्जा से भर गए। जिसे उन्होंने माली समझा था, वे तो स्वयं परमहंस जी ही थे। उनकी इस विनम्रता से डॉ० सरकार आश्चर्यचकित रह गए।

सच है, विनम्रता महापुरुषों का आभूषण है। यह एक बहुत बड़ा सद्गुण है। यह मानव को महामानव बनाता है।

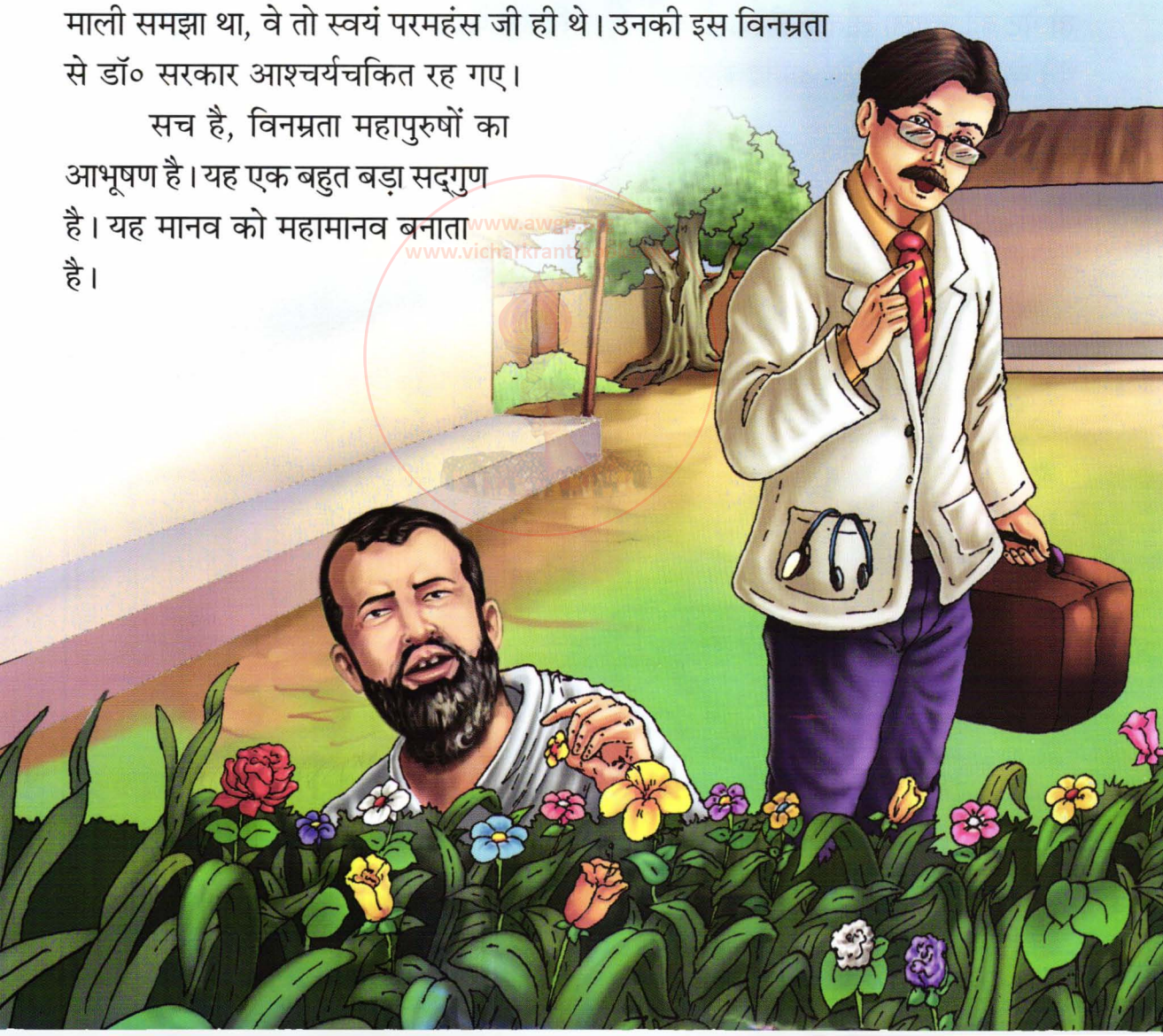

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामीजी ने सारी रोटियाँ बाँट दीं

स्वामी रामतीर्थ के जीवन की एक घटना है। भ्रमण एवं भाषणों से थके हुए स्वामीजी अपने निवास स्थान पर लौटे। उन दिनों वे एक महिला के यहाँ ठहरे थे। वे अपने ही हाथों भोजन बनाते थे। अपने स्वभाव के अनुसार वे भोजन की तैयारी ही कर रहे थे कि कुछ बच्चे पास में आकर खड़े हो गए। उनके पास बहुत बच्चे आया करते थे।

बच्चे भूखे थे। स्वामीजी ने अपनी सारी रोटियाँ एक-एक करके बच्चों में बाँट दीं। महिला वहीं बैठी सब देख रही थी। बड़ा आश्चर्य हुआ उसे। आखिर पूछ ही बैठी—"आपने सारी रोटियाँ तो उन बच्चों को दे डालीं, अब आप क्या खाएँगे?"

स्वामीजी के अधरों पर मुस्कान दौड़ गई। उन्होंने प्रसन्न होकर कहा—"माता, रोटी तो पेट की ज्वाला शांत करने वाली वस्तु है। यदि इस पेट में न सही, तो उस पेट में सही।" देने का आनंद पाने के आनंद से बड़ा है।

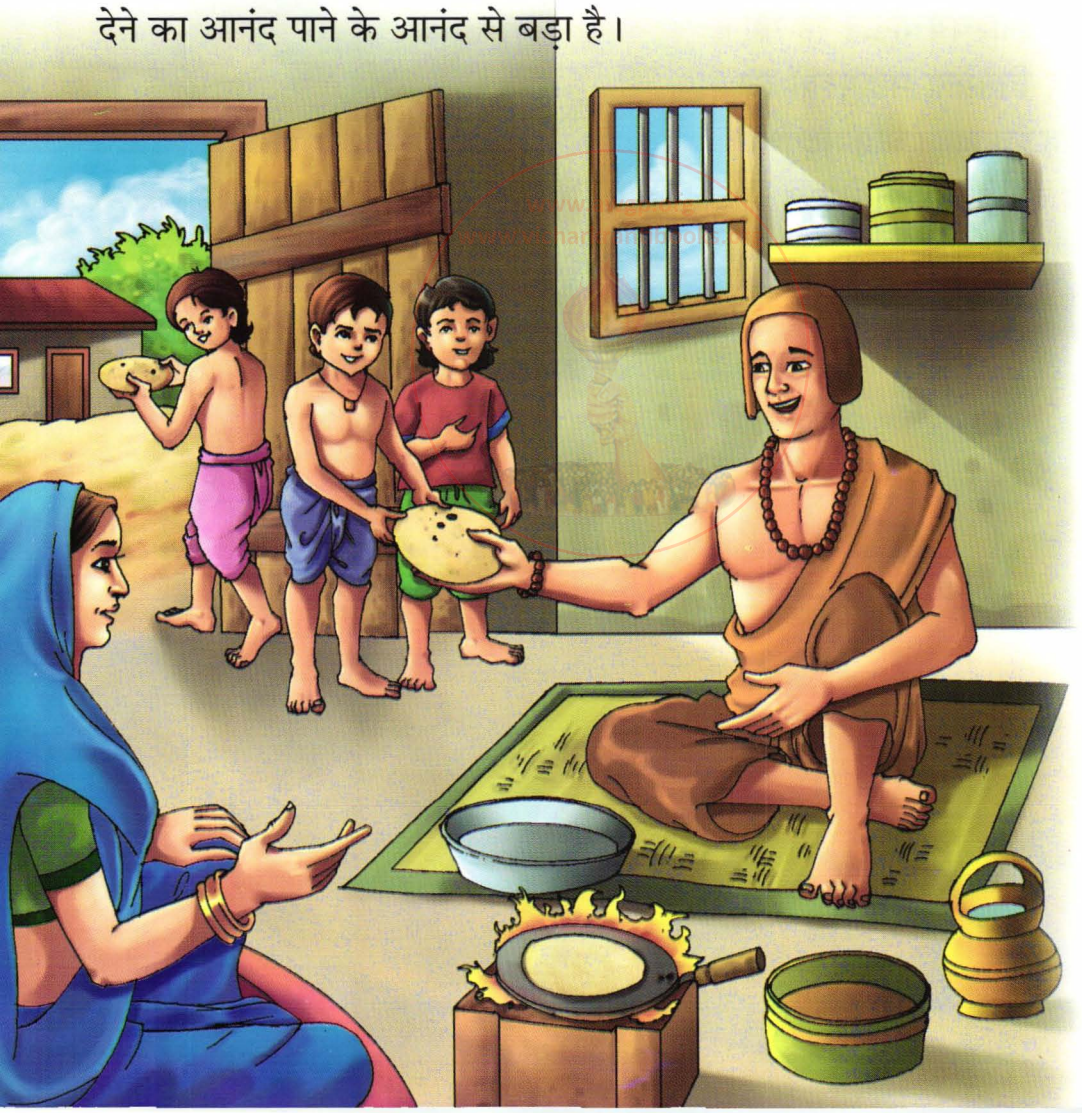

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भक्त नामदेव

प्राणिमात्र में भगवान की झाँकी करना और प्रत्येक के साथ प्रेम एवं आत्मीयता का व्यवहार करना यही तो ईश्वर भक्ति की कसौटी है। इस कसौटी पर भक्त नामदेव सदा खरे उतरते रहे। एक दिन वे रोटी बना रहे थे कि अचानक एक कुत्ता आया और उनकी बनाई हुई रोटियाँ मुँह में दबाकर भागा।

नामदेव उसके पीछे चुपके से घी की कटोरी लेकर जा पहुँचे और कुत्ते से कहा— ''मेरे भगवान! आपको भोग लगाने के लिए यह घी भी मैंने मँगा रखा था फिर आप रूखी रोटी क्यों खाते हैं?'' नामदेव ने कुत्ते को प्रेमपूर्वक खिलाया और उसकी रोटियाँ घीसे चुपड़ दीं।

सच्चा भक्त वही है जो प्राणिमात्र में भगवान के दर्शन करे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य-मनुष्य में भेद कैसा

अमरदास सिख संप्रदाय के तृतीय गुरु थे। उन्होंने अपने शिष्यों को एक साथ बैठकर एक ही भोजनालय में भोजन कराने की प्रथा आरंभ की । उन दिनों हिंदुओं में ऊँच-नीच, बड़े-छोटे का भाव बहुत अधिक फैल चुका था जिससे लड़ाई-झगड़े बढ़ रहे थे। गुरु अमरदास की धारणा थी कि इस प्रथा से मनुष्य-मनुष्य के बीच ऊँच-नीच की खाई समाप्त होगी इसलिए ही उन्होंने अपने अनुयायियों को इस प्रथा से भोजन करने का आदेश दे रखा था।

कभी भी छोटे-बड़े, ऊँच-नीच का भाव नहीं रखना चाहिए। सभी उस परम प्रभु की संतान हैं। साथ-साथ भोजन करने से सहयोग का, प्रेम का भाव उत्पन्न होता है।

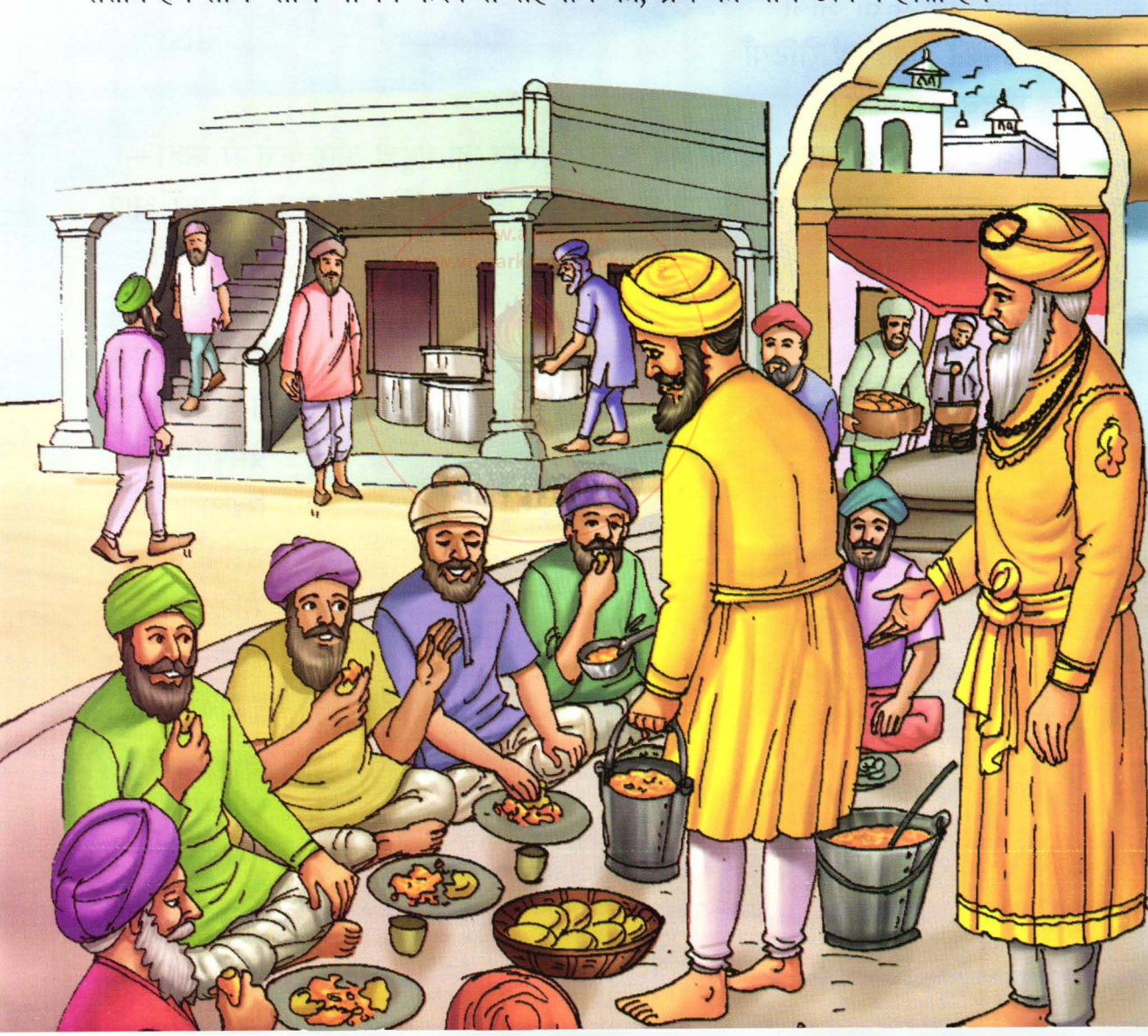

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डूबते को बचाया

एक बार नदी के किनारे से संत ज्ञानेश्वर जा रहे थे। समीप में ही एक लड़का स्नान कर रहा था और एक महात्मा जप कर रहे थे। एकाएक बच्चे का पैर फिसल गया और वह नदी के तेज बहाव में चला गया। लड़का सहायता के लिए चिल्लाया, पर महात्मा अपने जप में लगे रहे। एक बार डूबते बालक को देख लिया और फिर आँखें बंद कर लीं। संत ज्ञानेश्वर बिना देर किए नदी में कूद पड़े और डूबते बालक को बाहर खींच लाए। किनारे पर जप कर रहे महात्मा से संत ज्ञानेश्वर ने पूछा—"आप क्या कर रहे हैं?" महात्मा ने कहा—"जप कर रहे हैं" और पुनः आँखें बंद कर लीं। संत ने पूछा—"क्या ईश्वर के दर्शन हुए?" महात्मा ने उत्तर दिया—"नहीं। मन स्थिर नहीं हो रहा है।" संत ज्ञानेश्वर ने कहा—"तो उठो पहले दीन-दुःखियों की सेवा करो, उनके कष्टों में हिस्सा बँटाओ अन्यथा उपासना का कोई विशेष लाभ नहीं मिलेगा।" महात्मा को अपनी भूल मालूम हुई कि सच्चा जप तो यह था कि डूबते हुए बच्चे को बचाया जाता। उस दिन से वे उपासना के साथ-साथ दीन-दुखियों की सेवा में लग गए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अहंकार का बीज

रामकृष्ण परमहंस के दो शिष्य इसी बात पर परस्पर उलझ पड़े कि उनमें से कौन वरिष्ठ (बड़ा) है। विवाद तय न होने पर गुरुदेव के पास जाकर उन्होंने पूछा—"गुरुदेव! हम दोनों में से कौन बड़ा है?" बस इतनी सी बात के लिए उलझ रहे थे तुम लोग, परमहंस ने कहा—"तुम्हारे प्रश्न का उत्तर तो बहुत सरल है। जो दूसरे को बड़ा समझता है, वही बड़ा भी है और श्रेष्ठ भी।" यह समाधान पाकर वे दोनों मन में बहुत लज्जित हुए। उस दिन से बड़ा बनने की ललक और अहंकार का बीज ही मन से मिट गया।

मनुष्य की महानता बड़ा बनकर अहंकार करने में नहीं है वरन अपने को छोटा समझकर मिल-जुलकर अच्छे काम करने में है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

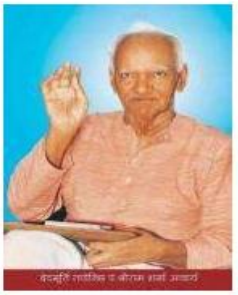

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org